संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०१४
वर्ष : २३ अंक : ९
(निरंतर अंक : २५५)

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज प्राकट्य दिवस : २७ मार्च

(पढ़ें पृष्ठ १३)

चेटीचंड पर्व : १ अप्रैल

(पढ़ें पृष्ठ ४)

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी का प्राकृतिक-वैदिक : होली रंगोत्सव

संत आशारामजी बापू निर्दोष हैं। आनेवाले समय में रेप का आरोप लगानेवाली महिलाओं का सच सामने आ जायेगा। – श्री अशोक सिंहल, अंतर्राष्ट्रीय संरक्षक, वि.हि.प.

धर्मांतरण कार्यों का प्रतिरोध करने में संत आशारामजी बापू सबसे आगे हैं। उनके खिलाफ किया गया केस पूरी तरह बोगस है। मेरे कानूनी सलाहकारों का यह फैसला है।

– प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी

संत श्री आशारामजी बापू पर किया गया केस झूठा है। लड़की की कहानी विश्वास करने योग्य नहीं है। – वरिष्ठ अधिवक्ता एवं न्यायविद् श्री राम जेठमलानी

आरोग्यता, समता व आत्मज्ञान से ओत-प्रोत पर्व

होली

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

वैदिक काल के ऋषियों की दृष्टि के अनुसार मौसम-परिवर्तन का दिन है फाल्गुन की पूनम। फाल्गुन की एकादशी से पूनम तक कई लोग पर्व मनाते हैं। इस पर्व के पीछे वैज्ञानिक तथ्य एवं मानसिक प्रसन्नता और शारीरिक सुरक्षा के बहुत रहस्य छुपे हुए हैं।

होली पर्व : १६ मार्च

होली पर्व का वैज्ञानिक विश्लेषण

सूर्य के प्रकाश में सप्तरंग छुपे हैं। अब यह सूर्य का प्रकाश धरती पर सीधा पड़ेगा क्योंकि अब उत्तरायण चल रहा है। दिन बड़ा होगा, रात छोटी होगी, गर्मी अधिक होगी और सर्दी अलविदा करती जा रही है। हमारी त्वचा पर सूर्य की किरणें सीधी पड़ेंगी और शरीर में गर्मी बढ़ेगी। हो सकता है कि गर्मी बढ़ने से पित्त बढ़ जाय और स्वभाव में गुस्सा व खिन्नता बढ़ जाय। इसलिए पलाश के पुष्पों का प्राकृतिक रंग एकत्र करके होली के दिनों में एक-दूसरे पर छिड़का जाता है ताकि हमारे शरीर की वह क्षमता बढ़ जाय जिससे सूर्य की तेज किरणें हमारे अंतर में विकृति न छोड़ें। यह आरोग्य की दृष्टि से कितनी सुंदर व्यवस्था है !

चिकित्सक कहते हैं कि जो इस उत्सव से वंचित रहते हैं, ऐसे लोगों को गर्मी के प्रकोप से बीमारियाँ हो सकती हैं अथवा ऐसा आदमी खिन्न स्वभाववाला हो सकता है। जो होली के उत्सव में प्राकृतिक रंगों का उपयोग नहीं करता, उसके शरीर में वर्षभर उष्णता अधिक रहती है, वह चिड़चिड़ा भी हो सकता है और चर्मरोगों के अलावा पित्तसंबंधी ४०, वायुसंबंधी ८० तथा पित्त में विकृत वायु मिलने से होनेवाले अनगिनत रोगों का भी शिकार हो सकता है। अधिक उष्णता व पित्त के कारण उसकी मानसिक चेतना अव्यवस्थित हो सकती है, वह 'शॉर्ट टेम्पर्ड' (गुस्सैल, आवेशी) हो सकता है और ऐसे बहुत पाये जाते हैं विदेशों में। असुविधाएँ भारत में ज्यादा हैं फिर भी आत्महत्याएँ विदेशों में ज्यादा होती हैं क्योंकि वहाँ ऋषि पद्धतिवाले पर्वों का आविष्कार नहीं है।

पूर्णिमा को चाँद पूर्ण कलाओं से विकसित होता है, इसका भी हमारे मन पर असर पड़ता है। इसीलिए पूनम पर, होली के पर्व पर मन विशेष आह्लादित होता है। पूनम पर हजारों-लाखों मील दूर चन्द्रमा का प्रभाव खारे समुद्र पर पड़ता है तो उसमें ज्वार आता है; इसका प्रभाव पेड़-पौधों पर भी पड़ता है और हमारे मन, रक्त और सप्तधातुओं पर पर भी पड़ता है। अतः एक तो ज्वार का अवसर है, दूसरा चाँद पूर्ण खिला है तो ऐसे में तन-मन को भी खिलने का अवसर है और इसी अवसर पर पूनम के दिन होली मनायी जाती है ताकि होली के रंगों का भी हमारे शरीर पर असर पड़े।

(शेष पृष्ठ ३८पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०९
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५५)
प्रकाशन दिनांक : १ मार्च २०१४
मूल्य : ₹ ६
फाल्गुन-चैत्र वि.सं. २०७०-७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : ₹ ६० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ १०० / -
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५ / -
(४) आजीवन : ₹ ५०० / -

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५०० / -

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषिप्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारतमें	७०	१३५	३२५
अन्यदेशोंमें	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

A2Z NEWS रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० (केवल मंगल, गुरु, शनि)

care WORLD रोज सुबह ७.०० बजे

मंगलमय चैनल पर उपलब्ध
www. ashram.org पर उपलब्ध

YUPPTV ZENGA TV → इंटरनेट टीवी ←

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

(१) आरोग्यता, समता व आत्मज्ञान से ओत-प्रोत पर्व : होली २
(२) पर्व मांगल्य ✻ क्रूर से डरो नहीं, स्वधर्म छोड़ो नहीं ४
(३) 'सत्य की जय होगी' ६
(४) स्वामी विवेकानंदजी ने भी सहे थे घृणित आरोप ७
(५) संत श्री आशारामजी गुरुकुलों को बदनाम करने की घिनौनी साजिश ८
(६) संयम की शक्ति ८
✻ आधुनिक चिकित्सकों की दृष्टि में ब्रह्मचर्य
(७) साधकों का है यह नारा, गुरुकुल में पढ़ेगा बच्चा हमारा ९
(८) प्राकृतिक-वैदिक होली रंगोत्सव १०
(९) जीवन सौरभ ✻ प्रेरणाप्रद होता है महापुरुषों का जीवन १२
(१०) संत-सम्मेलन, दिल्ली १३
(११) प्रेरक प्रसंग
✻ धैर्य व सूझबूझ के धनी : वीर शिवाजी १६
(१२) सुखमय जीवन के सोपान १७
✻ इच्छित संतान प्राप्त करने के उपाय ✻ उत्तम संतानप्राप्ति के लिए
(१३) घर-परिवार १९
✻ सत्संगी माँ की सुंदर सीख ने घर में बहायी प्रेम की गंगा
(१४) शास्त्र प्रसाद २०
✻ विभु तत्त्व को जानकर व्यापक हो जाओ
(१५) विद्यार्थियों के लिए
✻ बुलंदियों तक पहुँचानेवाले दो पंख २२
(१६) बाल संस्कार माला
✻ जब भगवान तक पहुँची चिट्ठी २४
(१७) माता-पिता की आराधना-पूजा से बहुत अच्छी सफलता मिलती है २५
(१८) तत्त्व दर्शन २६
✻ पराशर-मैत्रेय संवाद ✻ जाननेमात्र से कृतकृत्य !
(१९) अखबारों के झरोखे से... २७
(२०) बापूजी ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' द्वारा सांस्कृतिक धरोहर को बचाया है २९
(२१) विश्वभर में छाया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' अभियान 'बीबीसी वर्ल्ड' भी हुआ आकर्षित ३०
(२२) दगा दे सकता है आज भरोसा, सावधान रहें ! ३१
(२३) भक्तों के अनुभव ३२
✻ उत्तम संतानप्राप्ति के योग ने दिलायी उत्तम संतान
✻ की सेवा, मिला मेवा
(२४) शरीर-स्वास्थ्य ३३
✻ सफेद शक्कर का काला अंतरंग
✻ गले व छाती के रोगों में क्या करें ?
(२५) और भी व्यापक स्तर पर मनाया गया मातृ-पितृ पूजन दिवस ३४

क्रूर से डरो नहीं, स्वधर्म छोड़ो नहीं

- पूज्य बापूजी

(चेटीचंड पर्व : १ अप्रैल)

झूलेलालजी **का** वरुण अवतार यह खबर देता है कि कोई तुम्हारे को धनबल, सत्ताबल अथवा डंडे के बल से अपने धर्म से गिराना चाहता हो तो आप **'धड़ दीजिये धर्म न छोड़िये ।'** सिर देना लेकिन धर्म नहीं छोड़ना।

भगवान झूलेलाल का अवतरण सिंधु नदी के किनारे बसनेवाले सत्संगी लोगों ने करवाया था । मरख बादशाह जितना महत्त्वाकांक्षी था उतना ही धर्मांध और अनाचारी भी था। उसने हिन्दू जाति को समाप्त करने के लिए फरमान निकाला कि 'या तो हमारे मजहब में आ जाओ या तो मरने को तैयार हो जाओ।'

कई कायर लोगों ने मजहब बदला, हिन्दू धर्म छोड़कर गये। बाकी के लोगों ने सोचा कि 'नहीं, यह वैदिक धर्म है, किसी व्यक्ति का चलाया हुआ नहीं है। भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण का भी चलाया हुआ नहीं है, सनातन है। इसको छोड़कर हम दूसरे धर्म में जायें ? **स्वधर्मे निधनं श्रेयः...** अपने धर्म में मर जाना अच्छा है । लेकिन मरना भी कायरता है, डटे रहें, टक्कर लेनी चाहिए।' ऐसा सत्संग में सुना था। गये समुद्र के किनारे। ४० दिन का व्रत रखने का संकल्प लिया कि ४० दिन भगवान को पुकारेंगे।

आये हुए सभी लोग किनारे पर एकटक देखते-देखते पुकारते : 'हे सर्वेश्वर ! तुम अब रक्षा करो । मरख बादशाह तो धर्मांध है और उसका मूर्ख वजीर 'आहा', दोनों तुले हैं कि हिन्दू धर्म को नष्ट करना है। लेकिन प्रभु ! हिन्दू धर्म नष्ट हो जायेगा तो अवतार होने बंद हो जायेंगे । मानवता की महानता उजागर करनेवाले रीति-रिवाज सब चले जायेंगे । आप ही धर्म की रक्षा के लिए युग-युग में अवतरित होते हो । किसी भी रूप में अवतरित होकर प्रभु हमारी रक्षा करो। **रक्षमाम् ! रक्षमाम् !! ॐ...**' फिर शांत हुए तो इन्द्रियाँ मन में गयीं और मन बुद्धि में और बुद्धि भगवान में शांत हुई। ऐसी-ऐसी आराधना, पूजा, प्रार्थनाएँ कीं।

एक दिन संध्या के समय समुद्र की उन सात्त्विक लहरों के बीच झूलेलालजी का प्राकट्य हुआ। शीघ्र ही अवतार लेकर आने का आश्वासन, सांत्वना व हिम्मत देते हुए उन्होंने कहा : ''तुम भूखे हो, प्रसाद खा लो – मीठे चावल, कोहर, मिश्री और नारियल । मरख बादशाह को बोल दो कि मैं नसरपुर में ठक्कर रत्नराय के यहाँ आ रहा हूँ।''

सप्ताह हुआ होगा कि आकाशवाणी ने सत्य का रूप लिया । नसरपुर में ठक्कर रत्नराय के यहाँ संवत् १११७ के चैत्र शुक्ल पक्ष की द्वितीया को उस निराकार ब्रह्म ने माता देवकी के गर्भ से साकार रूप लिया । और मरख बादशाह को सन्मार्ग दिखाकर उसे धर्मांतरण करने से रोका ।

झूलेलाल भगवान के अवतार ने भी बहुत सारे लोगों को सत्संग द्वारा उन्नत किया । झूलेलाल भगवान के भाई थे - सोमा और भेदा । दोनों को उन्होंने कहा : ''तुम भी चलो, लोगों को जरा भलाई के रास्ते लगायेंगे ।'' लेकिन वे बोले : ''अरे ! यह कथा का काम तुम करो । हम तो कमायेंगे, धंधा करेंगे ।'' वे तो धंधे में लगे लेकिन ये तो जोगी गोरखनाथजी के सम्पर्क में आ गये व उनसे गुरुमंत्र लिया । गोरखनाथजी ने झूलेलालजी को कहा : ''जैसा मैं अमर योगी हूँ ऐसे ही तुम भी अमर होओगे ।'' तब से नाम पड़ गया 'अमरलाल' ।

तो चेटीचंड महोत्सव मानव-जाति को संदेश देता है कि क्रूर व्यक्तियों से दबो नहीं, डरो नहीं, अपने अंतरात्मा-परमात्मा की सत्ता को जागृत करो । परिस्थितियों से हार मत मानो, परिस्थितियों के प्रकाशक शुद्ध परमात्मा के ज्ञान में, परमात्म-प्रेरणा में, परमात्म-शांति में आओ ।

सिंधी लोग जल और ज्योत की उपासना करते हैं । जल द्रवरूप होता है, शीतलता देता है अर्थात् आपका हृदय द्रवीभूत हो और उसमें भगवान की शीतलता आये । ज्योत प्रकाश देती है और प्रेरणा देती है कि सुख में भी फँसो नहीं, दुःख में भी फँसो नहीं । किसी भी परिस्थिति में फिसलो नहीं, फँसो नहीं; प्रकाश में जियो, ज्ञान में जियो !

महाशुभ मुहूर्त : गुडी पड़वा

(३१ मार्च)

चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या गुडी पड़वा वर्ष का आरम्भ दिवस माना जाता है । कई प्रकार से यह महत्त्वपूर्ण है । एक तो प्राकृतिक ढंग से, कि यह वसंत ऋतु है । गीता के दसवें अध्याय के ३५वें श्लोक में भगवान ने इस ऋतु की महिमा बताते हुए कहा है : ऋतूनां कुसुमाकरः । 'ऋतुओं में वसंत मैं हूँ ।'

दूसरा ऐतिहासिक ढंग से, कि भगवान राम ने इस दिन बालि का वध किया था, गुडी पड़वा पर्व के दिन विजयपताका फहरायी । शालिवाहन ने शत्रुओं पर विजय पायी, जिससे इस दिन से शालिवाहन शक प्रारम्भ हुआ । इसी दिन राजा विक्रमादित्य ने शकों पर विजय पायी और विक्रम संवत्सर प्रारम्भ हुआ । चैत्री नवरात्र भी इसी दिन से शुरू होता है । आध्यात्मिक ढंग से देखें तो यह सतयुग का प्रारम्भिक दिवस है । वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक है गुडी पड़वा का दिन ! यह बिना मुहूर्त के मुहूर्त है अर्थात् इस पूरे दिन शुभ मुहूर्त रहता है, पंचांग में शुभ मुहूर्त नहीं देखना पड़ता । इस दिन जितना भी भजन, ध्यान, जप, मौन, सेवा की जाय, उसका अनेक गुना फल मिलता है । अंतर्मुख होना हो तो इसके लिए यह बड़ा हितकारी दिवस है ।

सत्य की जय होगी

जोधपुर कारावास के दौरान पूज्य बापूजी समय-समय पर ढाढ़स बँधानेवाले अपने संदेशों के द्वारा करोड़ों आहत दिलों को सत्प्रेरणा एवं सांत्वना प्रदान करते रहे हैं। साथ ही षड्यंत्रों के पीछे छुपे असामाजिक तत्त्वों से साधकों को सावधान भी करते रहे हैं।

पूज्य बापूजी : ''भारतीय जनता सब जानती है। आरोप ११० प्रतिशत बोगस हैं, फेब्रिकेटेड (बनावटी) हैं। फेब्रिकेटेड 'फेब्रिकेटेड' होता है, झूठ 'झूठ' होता है, सत्य 'सत्य' होता है। सत्य की जय होगी।''

'वह पीड़िता नहीं है...'

११ अक्टूबर को न्यायालय में आरोप लगानेवाली लड़की के पक्ष के वकील द्वारा लड़की को बार-बार 'पीड़िता-पीड़िता' कहकर सम्बोधित किये जाने पर बापूजी उसे बोले : ''मेहरबानी करके लड़की को 'पीड़िता' मत बोलो, उसके साथ कुछ नहीं हुआ है।''

'सत्य मेरा रक्षक है'

न्यायालय से बाहर आते समय मीडिया द्वारा स्वास्थ्य के बारे में पूछे जाने पर बापूजी बोले : ''मेरा स्वास्थ्य टूटा है, मैं नहीं टूटा हूँ। मैं क्यों टूटूँगा ! सत्य मेरा रक्षक है।'' पूज्य बापूजी : ''सब बीत जायेगा, सत्य की जय होगी और सब आनंद में रहो, मेरी चिंता मत करो।''

'असामाजिक तत्त्वों से सावधान !'

पूज्य बापूजी : ''असामाजिक तत्त्वों से सावधान रहें। ऐसे तत्त्व साधकों को गुमराह करके बुलाते हैं। साधकों के बीच घुसकर उनको बदनाम करते हैं। पुलिस, मीडिया, वकील और साधकों को भिड़ाते हैं। अतः साधक सावधान रहें।''

(पृ.७ का संत श्री आशारामजी...का शेष) **इस प्रकार की झूठी जानकारी मीडिया को कहाँ से मिली है और उन्होंने इस खबर को प्रकाशित करने से पहले माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जारी किये गये निर्देशों एवं प्रेस काउन्सिल ऑफ इंडिया अथवा एन.बी.ए. की गाइडलाइन्स का पालन क्यों नहीं किया ?**

यह सब संत श्री आशारामजी गुरुकुलों को बदनाम करने की सोची-समझी साजिश है। इन खबरों को पढ़कर देश-विदेश के साधकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँची है। गुरुकुलों से जुड़े साधकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की अक्षम्य मानहानि हुई है।

यह कपोलकल्पित खबर छापनेवाले अखबार क्षमायाचना करते हुए खंडन प्रकाशित करें, नहीं तो साधक उनके विरुद्ध न्यायालय में जा सकते हैं, जिसके जिम्मेदार वे खुद होंगे।

हिन्दू संतों के दुष्प्रचार के पीछे किसका हाथ ?

स्वामी विवेकानंदजी जब अमेरिका में सनातन धर्म की महिमा गाकर भारत का गौरव बढ़ा रहे थे तब वहाँ कुछ हिन्दुओं ने ही उनकी निंदा करना, कुप्रचार करनेवालों को सहयोग देना शुरू कर दिया, जिनमें मुख्य थे वीरचन्द गांधी और प्रतापचन्द्र मजूमदार। प्रतापचन्द्र मजूमदार ईसाई मिशनरियों की कठपुतली बन गया। 'विवेकानंदजी एक विषयलम्पट साधु, विलासी युवक और हमेशा जवान लड़कियों के बीच रहनेवाला चरित्रहीन पुरुष है' - ऐसा अमेरिका के प्रसिद्ध अखबारों में लिखने लगा। इन दुष्प्रचारकों ने 'विवेकानंदजी के भक्त की नौकरानी का विवेकानंदजी के द्वारा यौन-शोषण किया गया' ऐसी मनगढ़ंत कहानी भी छाप दी। जिस भवन में स्वामी विवेकानंदजी का प्रवचन होता उसके सामने वे लोग एक अर्धनग्न लड़की के साथ विवेकानंदजी के फोटो के पोस्टर भी लगा देते थे। फिर भी स्वामी विवेकानंदजी के अमेरिकन भक्तों की श्रद्धा वे हिला न सके। तब प्रतापचन्द्र मजूमदार भारत आया और उनकी निंदा करने लगा। विवेकानंदजी पर ठगी, अनेक स्त्रियों का चरित्रभंग करने के आरोप लगाने लगा। 'स्वामी विवेकानंदजी भारत के सनातन धर्म के किसी भी मत के साधु ही नहीं हैं' - ऐसा दुष्प्रचार करने लगा।

विधर्मियों द्वारा षड्यंत्रों के तहत लगवाये गये ऐसे अनेक आरोपों को झेलते हुए भी स्वामी विवेकानंदजी सनातन धर्म का प्रचार करते रहे। उन्हें आज समस्त विश्व के लोग एक महापुरुष के रूप में आदर से देखते हैं लेकिन मजूमदार जैसे लोग किस नरक में सड़ते होंगे हमें पता नहीं।

संत श्री आशारामजी गुरुकुलों को बदनाम करने की घिनौनी साजिश

१८ व १९ फरवरी को कुछ अखबारों में खबर छपी कि महाराष्ट्र के आदिवासी इलाकों में स्थित आशारामजी स्कूलों में २००२ से २०१३ के बीच ८०० बच्चों की मौत साँप, बिच्छू काटने आदि से हो गयी। यह खबर बिल्कुल झूठी, बेबुनियाद और मनगढ़ंत है। क्योंकि महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्र में आश्रम का कोई भी गुरुकुल है ही नहीं। दूसरा, २००२ से अभी तक महाराष्ट्र के किसी भी गुरुकुल में एक भी बच्चे की मृत्यु किसी भी प्रकार से नहीं हुई है।

अखबारों ने यह बात छापने से पहले संस्था के किसी अधिकृत व्यक्ति से सम्पर्क क्यों नहीं किया ? किसी बच्चे के माता-पिता ने आज तक कोई शिकायत नहीं की फिर यह बात मीडिया कैसे कह सकते हैं ? 'पिछले कुछ वर्षों में साँप, बिच्छू आदि काटने से ८०० बच्चों की मृत्यु हो गयी', ऐसा जो कुप्रचारवालों ने लिखा है, वह बिल्कुल बकवास है, बेबुनियाद बातें हैं।

मीडिया में आया कि वहाँ के गुरुकुलों के ७४ कर्मचारियों को निलम्बित किया गया तथा २८ के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही, ९९ को कारण बताओ नोटीस तथा ९९ को सरकार ने चेतावनी दी। यह बात भी सरासर झूठी और मनगढ़ंत है। एक भी कर्मचारी के खिलाफ सरकार द्वारा उपरोक्त कोई भी कार्यवाही नहीं की गयी है। **(शेष पृ.६ पर)**

साधकों का है यह नारा, गुरुकुल में पढ़ेगा बच्चा हमारा

विद्यार्थियों के जीवन में आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय संस्कृति के संस्कारों-मूल्यों का समन्वय हो एवं उनका सर्वांगीण विकास हो इस उद्देश्य से पूज्य बापूजी की पावन प्रेरणा से देश के विभिन्न स्थानों पर पिछले अनेक वर्षों से गुरुकुल चलाये जा रहे हैं। इनमें अध्ययन करके लाखों नौनिहालों का जीवन ओजस्वी-तेजस्वी हुआ है।

किसी भी गुरुकुल में न तो बच्चों की संख्या पर असर हुआ है और न ही शिक्षक आदि कुप्रचार के शिकार हुए हैं। सभी गुरुकुलों में पढ़ाई, खेलकूद, संस्कार-सिंचन, पर्व-जयंतियाँ मनाना, मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाना और अन्य सत्प्रवृत्तियाँ दुष्प्रचार से अप्रभावित रहकर सुचारु रूप से चल रही हैं।

खुशखबर !

अब नये सत्र २०१४-१५ के लिए सभी गुरुकुलों में प्रवेश शुरू हो चुका है। वर्तमान में देशभर में ४० से अधिक गुरुकुल चल रहे हैं। साधक, 'बाल संस्कार केन्द्र' के शिक्षक एवं अभिभावक विद्यार्थियों को गुरुकुलों में प्रवेश हेतु प्रेरित कर रहे हैं।

विशेष : संस्कार और शिक्षण में अग्रणी आनेवाले विद्यार्थियों के लिए शुल्क में विशेष छूट और छात्रवृत्ति (स्कॉलरशिप) का भी प्रावधान है।

वर्तमान प्रतिस्पर्धा के युग में विद्यार्थियों को हर क्षेत्र में सफल बनाने में एवं सुखी, स्वस्थ और सम्मानित जीवन जीने की कला सिखाने में गुरुकुल की शिक्षा-प्रणाली महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हाल ही में १४-१५ जनवरी को उत्तरायण के शुभ अवसर पर सभी प्रमुख गुरुकुलों के शिक्षकों को इस हेतु अहमदाबाद गुरुकुल में प्रशिक्षण भी दिया गया।

अक्षर आप किसी अन्य विद्यालय में शिक्षक हैं और गुरुकुल में उचित वेतन पर शिक्षक बनकर वेतन के साथ सेवा करने के इच्छुक हैं तो सम्पर्क करें -

09023268823, email: gurukul@ashram.org

गुरुकुल की आधारभूत शिक्षण-प्रणाली के मुख्य बिंदु

(१) सरल सारांश : मूलभूत विषयों को सारगर्भित व आसान भाषा में समझाना।

(२) जिज्ञासा जागृति : विद्यार्थियों को प्रश्न व उत्तर हेतु प्रेरित कर उनके अंदर छिपी जिज्ञासा व ज्ञान को जागृत करना।

(३) प्रायोगिक शिक्षा : प्रयोग करवाकर, चित्र दिखा के और कई नये रचनात्मक तरीकों से विषय को बुद्धि की गहराई में स्थिर करना।

(४) भीतरी शक्तियों का विकास व सृजनात्मकता को प्राथमिकता

(५) आदर्श जीवन-निर्माण : बड़ों के प्रति आदर, सहपाठियों के प्रति सद्भाव और मानवीय संवेदनशीलता के संस्कार जगाना।

(६) आध्यात्मिकता से दिव्यता : ब्रह्मनिष्ठ संत पूज्य बापूजी के पावन मार्गदर्शन द्वारा सभी शिक्षाओं-उपलब्धियों की मूल आध्यात्मिक शक्तियों को जगाकर विद्यार्थियों में अमूल्य दैवी सम्पदा विकसित करना।

(७) मौलिकता की खोज : बौद्धिक स्तर के अनुसार मूलभूत सिद्धांतों एवं तथ्यों को भी पढ़ाना ताकि कोई बात रटनी न पड़े।

तो गूँजा दीजिये अब हर जगह यह नारा।
बच्चा तो पढ़ेगा गुरुकुल में ही हमारा॥

आधुनिक चिकित्सकों की दृष्टि में ब्रह्मचर्य

(गतांक से आगे)

यूरोप के प्रतिष्ठित चिकित्सक भी भारतीय योगियों के कथन का समर्थन करते हैं। डॉ. निकोल कहते हैं : ''यह एक औषध-संबंधी और दैहिक तथ्य है कि शरीर के सर्वोत्तम रक्त से स्त्री तथा पुरुष दोनों ही जातियों में प्रजनन तत्त्व बनते हैं। शुद्ध तथा व्यवस्थित जीवन में यह तत्त्व पुनः अवशोषित हो जाता है। यह सूक्ष्मतम मस्तिष्क, स्नायु तथा मांसपेशीय ऊतकों (Tissues) का निर्माण करने के लिए तैयार होकर पुनः परिसंचारण में जाता है। मनुष्य का यह वीर्य वापस ले जाने तथा उसके शरीर में विसारित होने पर उस व्यक्ति को निर्भीक, बलवान, साहसी तथा वीर बनाता है। यदि इसका अपव्यय किया गया तो यह उसको स्त्रैण, दुर्बल, कृशकलेवर, कामोत्तेजनशील व उसके शरीर के अंगों के कार्य-व्यापार को विकृत एवं स्नायुतंत्र को शिथिल (दुर्बल) करता है तथा उसे मिर्गी व अन्य अनेक रोगों और शीघ्र मृत्यु का शिकार बना देता है। जननेन्द्रिय के व्यवहार की निवृत्ति से शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक बल में असाधारण वृद्धि होती है।''

परम धीर तथा अध्यवसायी वैज्ञानिक अनुसंधानों से पता चला है कि जब कभी भी वीर्यस्राव को सुरक्षित रखा जाता है तथा इस प्रकार शरीर में उसका पुनरवशोषण किया जाता है तो वह रक्त को समृद्ध तथा मस्तिष्क को बलवान बनाता है। डॉ. डिओ लुई कहते हैं : ''शारीरिक बल, मानसिक ओज तथा बौद्धिक कुशाग्रता के लिए इस वीर्य का संरक्षण परम आवश्यक है।''

एक अन्य लेखक डॉ. ई. पी. मिलर लिखते हैं : 'शुक्रस्राव का स्वैच्छिक अथवा अनैच्छिक अपव्यय जीवनशक्ति का प्रत्यक्ष अपव्यय है। यह प्रायः सभी स्वीकार करते हैं कि रक्त के सर्वोत्तम तत्त्व वीर्य की संरचना में प्रवेश कर जाते हैं। यदि यह निष्कर्ष ठीक है तो इसका अर्थ यह हुआ कि व्यक्ति के कल्याण के लिए जीवन में ब्रह्मचर्य परम आवश्यक है।'

पश्चिम के प्रख्यात चिकित्सक कहते हैं कि वीर्यक्षय से, विशेषकर तरुणावस्था में वीर्यक्षय से विविध प्रकार के रोग एवं दोष उत्पन्न होते हैं। वे हैं : शरीर में व्रण, चेहरे पर मुँहासे अथवा विस्फोट, नेत्रों के चारों ओर नीली रेखाएँ, दाढ़ी का अभाव, धँसे हुए नेत्र, रक्तक्षीणता से पीला चेहरा, स्मृतिनाश, दृष्टि की क्षीणता, मूत्र के साथ वीर्यस्खलन, अंडकोश की वृद्धि, अंडकोशों में पीड़ा, दुर्बलता, निद्रालुता, आलस्य, उदासी, हृदय-कम्प, श्वासावरोध या कष्टश्वास, राजयक्ष्मा या क्षयरोग (टी.बी.), पीठदर्द, कमरदर्द, सिरदर्द, जोड़ों का दर्द, दुर्बल गुर्दे, निद्रा में मूत्र निकल जाना, मानसिक अस्थिरता, विचारशक्ति का अभाव, दुःस्वप्न, स्वप्नदोष तथा एकमात्र इलाज है ब्रह्मचर्य, यौवन-तत्त्व की सुरक्षा ! दवाइयों से या अन्य उपचारों से ये स्थायी रूप से ठीक नहीं होते। (आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'यौवन सुरक्षा भाग-२' से क्रमशः)

प्राकृतिक-वैदिक : होली रंगोत्सव

होली का त्यौहार हमारे पूरे देश में मनाया जाता है । यह पर्व मूल में बड़ा ही स्वास्थ्यप्रद एवं मन की प्रसन्नता बढ़ानेवाला है । परंतु दुर्भाग्यवश कुछ लोगों द्वारा इस पर्व को रासायनिक रंगों से मनाने की कुप्रथा चल पड़ी और अनर्गलता ने इसे और भी विकृत बना दिया है । आजकल के आधुनिक चिकित्सक एवं वैज्ञानिक भी रासायनिक रंगों से होनेवाली हानियों को उजागर कर रहे हैं ।

मुंबई के डॉ. सुलेमान मर्चेंट कहते हैं : ''रंगों के जहरीले रसायन त्वचा के द्वारा जल्द ही खून में मिल जाते हैं और हिमोग्लोबिन के साथ प्रतिक्रिया कर बुद्धि और हृदय जैसे महत्त्वपूर्ण केन्द्रों को ऑक्सीजन से रहित कर देते हैं, जिससे मृत्यु भी हो सकती है ।''

नेत्र-विशेषज्ञ डॉ. मेहता का कहना है : ''रासायनिक रंगों में चमक ऐसे हानिकारक पदार्थों से आती है जो कि नेत्र-पटलों (श्वेत-पटलों) को चीरकर हानि पहुँचा सकते हैं । पानी से भरे गुब्बारे तो इतने खतरनाक होते हैं कि मस्तिष्क व आँखों को अंदरूनी घाव पहुँचा सकते हैं, जो जानलेवा भी हो सकता है !''

चर्म-विशेषज्ञ रमेश बब्बू (उर्सूला होर्समन अस्पताल, कानपुर) का कहना है : ''रासायनिक रंगों से डर्मेटाइटिस (एक त्वचारोग) भी हो सकता है । त्वचा संक्रमण के अलावा आँखों का अल्सर, कंजंक्टिवाइटिस और एलर्जी भी हो सकती है । इनसे आँख में मवाद बनने पर व्यक्ति पूर्णतः अंधा भी हो सकता है ।

लेड ऑक्साइड, इंडस्ट्रीयल डाई और इंजिन तेल जैसे जहरीले पदार्थों से युक्त रंग जब नदियों में प्रवेश करते हैं तो पानी और जमीनी मिट्टी को भी प्रदूषित करते हैं । इससे अन्य कई जीवों की जान को खतरा पैदा हो जाता है ।''

रासायनिक रंगों से होनेवाली हानियाँ :

रंग	रसायन	दुष्प्रभाव
काला रंग	लेड ऑक्साइड	गुर्दे की बीमारी, दिमाग की कमजोरी
हरा रंग	कॉपर सल्फेट	आँखों में जलन, सूजन, अस्थायी अंधत्व
सिल्वर रंग	एल्यूमीनियम ब्रोमाइड	कैंसर
नीला रंग	प्रूशियन ब्लू	'कॉन्टैक्ट डर्मेटाइटिस' नामक भयंकर त्वचारोग
लाल रंग	मरक्युरी सल्फाइड	त्वचा का कैंसर
बैंगनी	क्रोमियम आयोडाइड	दमा, एलर्जी

इसके अलावा स्वभाव में शुष्कता, उग्रता आने जैसी कई हानियाँ हैं। वर्ष २०१२ में मुंबई में जहरीले रासायनिक रंगों के कारण २०० लोग अस्पताल में भर्ती होने व एक बच्चे की मृत्यु होने की घटना सभी जानते हैं। ऐसी और भी घटनाएँ हैं। होली पर कुछ गुमराह युवा ड्रग्स, दारू आदि का भारी मात्रा में सेवन करते हैं और नशे में दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं, जिससे उनकी व औरों की जिंदगी खतरे में आ जाती है।

होली के स्वास्थ्यहितकारी एवं ज्ञानवर्धक पहलुओं को उजागर करने हेतु पूज्य बापूजी द्वारा पिछले तीन दशकों से पलाश के फूलों से बने प्राकृतिक रंग में गंगाजल, तीर्थों का अभिमंत्रित जल आदि मिलाकर उससे **'प्राकृतिक-वैदिक होली रंगोत्सव'** सामूहिक रूप से मनाया जा रहा है। इससे रोग, शोक, दुःख, संताप मिटने के अनेकों के अनुभव हैं। इसने आज एक क्रांति का रूप ले लिया है। वर्ष २०१३ में देश के १३ स्थानों पर बापूजी के सान्निध्य में होली रंगोत्सव मनाया गया, जिसमें प्रत्येक स्थान पर लाखों-लाखों लोगों ने इसका लाभ लिया। पूज्य बापूजी से प्रेरणा लेकर देश के अनेक मत-पंथों, सम्प्रदायों के लोगों ने भी प्राकृतिक होली मनायी।

बापूजी के सान्निध्य में मनायी जानेवाली होली शरीर का रंग-संतुलन, सम्पूर्ण स्वास्थ्य व मानसिक प्रसन्नता के साथ ईश्वरीय ज्ञान, वैदिक तत्त्वज्ञान पाने का भी सुंदर अवसर बन जाती है। रासायनिक रंगों से होली खेलने में प्रति व्यक्ति ३५ से ३०० लीटर पानी खर्च होता है, जबकि पूज्य बापूजी के सान्निध्य में खेली जानेवाली सामूहिक प्राकृतिक-वैदिक होली में प्रति व्यक्ति ३० से ६० मि.ली. से कम पानी लगता है। इस प्रकार बापूजी ने देश की जल-सम्पदा की हजारों गुना बचत की है। इससे विदेशी केमिकल कम्पनियों को जानेवाले अरबों रुपये भी बच जाते हैं, जो देश की आर्थिक समृद्धि के लिए महत्त्वपूर्ण है। पलाश के फूल और गोंद आदि के उपयोग से जंगल में रहनेवाले आदिवासियों की आजीविका का मार्ग भी प्रशस्त हो गया।

प्राकृतिक रंग कैसे बनायें ?

*** केसरिया रंग :** पलाश के फूलों को रात को पानी में भिगो दें। सुबह इस केसरिया रंग को ऐसे ही प्रयोग में लायें या उबालकर, उसे ठंडा करके होली का आनंद उठायें। यह कफ, पित्त, कुष्ठ, दाह, मूत्रकृच्छ, वायु तथा रक्तदोष का नाश करता है। साथ ही रक्तसंचार में वृद्धि करता है एवं मांसपेशियों का स्वास्थ्य, मानसिक शक्ति व संकल्पशक्ति को बढ़ाता है।

*** सूखा हरा रंग :** केवल मेंहदी चूर्ण या उसे समान मात्रा में आटे में मिलाकर बनाये गये मिश्रण का प्रयोग करें।

*** गीला लाल रंग :** दो चम्मच मेंहदी चूर्ण को एक लीटर पानी में अच्छी तरह घोल लें।

*** सूखा पीला रंग :** ४ चम्मच बेसन में २ चम्मच हल्दी चूर्ण मिलायें। सुगंधयुक्त कस्तूरी हल्दी का भी उपयोग किया जा सकता है और बेसन की जगह गेहूँ का आटा, चावल का आटा, आरारोट का चूर्ण, मुलतानी मिट्टी आदि उपयोग में ले सकते हैं।

*** गीला पीला रंग :** २ चम्मच हल्दी चूर्ण २ लीटर पानी में डालकर अच्छी तरह उबालें।

*** काला रंग :** आँवला चूर्ण लोहे के बर्तन में रातभर भिगोयें।

*** गीला लाल रंग :** पान पर लगाया जानेवाला एक चुटकी चूना और दो चम्मच हल्दी को आधा प्याला पानी में मिला लें। कम-से-कम १० लीटर पानी में घोलने के बाद ही उपयोग करें।

प्रेरणाप्रद होता है महापुरुषों का जीवन

(ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज प्राकट्य दिवस : २७ मार्च)

परम पूज्य लीलाशाहजी महाराज

संतजन समाज से जो पाते हैं वह सारा-का-सारा तो समाज की सेवा में लगाते ही हैं, साथ ही जो परमात्म-अनुभव का खजाना उन्होंने तपस्या व गुरुसेवा करके पाया होता है, जिसकी तुलना में त्रिलोकी का वैभव भी तुच्छ है, वह भी वे समाज में खुले हाथों लुटाते हैं।

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज एक ऐसी दिव्य विभूति व महान संत थे जिन्होंने समाज को जीने का ढंग सिखाने के साथ अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत व साहस का गुण भी अपने आचरण से सिखाया। महान परमात्म-अनुभूति के धनी होने पर भी वे अपने को जनसाधारण का ही एक सदस्य मानते थे तथा उनके दुःखों को हरने के लिए सदैव तत्पर रहते थे।

एक बार साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के शिष्य उनके लिए प्रथम श्रेणी की टिकट लेकर खेरथल स्टेशन (राजस्थान) पर रेलगाड़ी का इंतजार कर रहे थे। गाड़ी रुकी लेकिन गार्ड ने प्रथम श्रेणी के डिब्बे में ताला लगा रखा था। सेवक के पूछने पर गार्ड बोला : ''दूसरी तरफ के दरवाजे से चढ़ जाओ।'' लेकिन उस ओर प्लेटफार्म था ही नहीं।

अन्य यात्री और सेवक तो जाने लगे लेकिन साँईंजी ने कहा : ''यह बिना कारण दरवाजा बंद करके जनता को परेशान कर रहा है। अगर ऐसे सहन करेंगे तो जनता के लिए कौन कोशिश करेगा ? हम इसी दरवाजे से चढ़ेंगे!''

गार्ड ने सुना-अनसुना कर सीटी बजायी और चालक ने अपनी सारी कोशिशें करके देख लिया लेकिन चलने की बात तो दूर रही, रेलगाड़ी अपने स्थान से हिली तक नहीं।

चालक का बेहाल चेहरा देखकर सेवक ने गार्ड से कहा : ''जिद छोड़कर दरवाजा खोल दो, नहीं तो रेलगाड़ी खड़ी ही रहेगी।'' आखिर गार्ड ने अपनी गलती स्वीकार करके क्षमा माँगी और दरवाजा खोल दिया। लीलाशाहजी महाराज व अन्य यात्री बैठे तब रेलगाड़ी आगे बढ़ी।

उस समय एक सेवक के मन में प्रश्न उठा कि 'इस छोटी-सी बात के लिए गुरुजी ने अपनी आत्मशक्ति का उपयोग क्यों किया ?' उन महापुरुष ने उसके मन की बात जान ली और आगरा पहुँचकर पत्र द्वारा उत्तर भेजा : 'हमें सचमुच गाड़ी रोकने का विचार नहीं था। यदि वह दरवाजा नहीं भी खोलता तो हमारा काम तो चल जाता परंतु दरवाजा न खुलने के कारण अन्य कई मुसाफिरों को तकलीफ होती क्योंकि वह पैसेंजर रेलगाड़ी थी, प्रत्येक स्टेशन पर रुकती है, कई मुसाफिर चढ़ते-उतरते। इसके अलावा गार्ड को अपनी गलती का एहसास हुआ कि बिना कारण किसीको परेशान नहीं करना चाहिए।'

महापुरुष खुद के लिए तो सहनशक्ति का परिचय देते हैं परंतु जनता को अन्याय से मुक्त कराने में यत्नशील रहते हैं।

***

संत-सम्मेलन, दिल्ली

४ फरवरी को जंतर-मंतर, दिल्ली में 'संत महासभा' के तत्त्वावधान में विशाल संत-सम्मेलन व धरना-प्रदर्शन हुआ। इस संत-सम्मेलन में विभिन्न धर्मों के आचार्यों, संतों, संगठनों के प्रमुखों एवं गणमान्य हस्तियों ने भारतीय संस्कृति एवं संतों पर हो रहे षड्यंत्रों का कड़ा विरोध किया। संत-सम्मेलन के बाद संतों एवं हजारों की संख्या में उपस्थित संस्कृतिप्रेमी जनता ने पूज्य बापूजी एवं उनके परिवार के खिलाफ हो रहे षड्यंत्र तथा अन्य हिन्दुत्ववादी मुद्दों को लेकर माननीय राष्ट्रपतिजी को ज्ञापन सौंपा।

स्वामी चक्रपाणिजी महाराज, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत महासभा : बापूजी ने जब देखा, अनुभव किया कि धर्म संकट में पड़नेवाला है तो किसी और के जेल जाने से पहले वे खुद ही जेल चले गये।

याद करो गुरुओं का बलिदान ! जो महापुरुष होते हैं वे जब धर्म पर आँच आती है तो खुद कष्ट सहकर भी धर्म की रक्षा करते हैं और यह काम बापूजी ने किया है।

सेनाचार्य स्वामी श्री नरेशानंदजी, शुक्रताल : पूज्य संत आशारामजी बापू ने ध्यान-भजन, सद्बुद्धि दे के करोड़ों-करोड़ों इन्सानों को महात्मा बना दिया है। बापू की ऊर्जा और बढ़ रही है, वे कमजोर नहीं हैं । जब बापूजी बाहर आ जायेंगे और पहला सत्संग व मंत्रदीक्षा का कार्यक्रम देंगे तो जो अभी बापूजी के निंदक हैं, उनमें से ७० प्रतिशत तो बापूजी के साधक बनेंगे। वे बापू के चरणों में माथा टेक के रोयेंगे कि 'बापूजी हमें माफ कर दो !'

श्री मुकेश खन्ना, 'महाभारत' धारावाहिक के भीष्म पितामह तथा 'शक्तिमान' धारावाहिक के शक्तिमान : आज हमारे महान देश की संस्कृति पर कहीं-न-कहीं विदेशी लोगों द्वारा सेंध लगायी जा रही है। यह संघर्ष का युग है लेकिन जीत हमेशा सत्य की होती है, असत्य की पराजय होती है और सत्य आप लोगों के साथ है तो आप लोगों की जीत होगी।

महामंडलेश्वर श्री रामस्वरूपजी महाराज, उपाध्यक्ष, हिन्दू महासभा : जो संतों का साथ देगा उसको हम वोट देंगे, जो संतों के लिए काम करेगा उसको हम प्रधानमंत्री बनायेंगे और जो संतों के लिए काम नहीं करता है वह किसी लायक नहीं रहेगा।

हमारी कुर्बानी का पूर्ण परिचय बापू आशारामजी दे चुके हैं, वे पूरी शांति का परिचय दे रहे हैं। इससे आगे हम ये अत्याचार सहन नहीं करेंगे।

श्री राजशेखर उपाध्याय, 'रामायण' धारावाहिक के जाम्बवंत : हमारे गुरुदेवजी निर्दोष थे, निर्दोष हैं और निर्दोष रहेंगे।

श्री अखिलेश तिवारीजी, अध्यक्ष, ब्राह्मण एकता सेवा संस्था : षड्यंत्रकारियों को अब हमें जवाब देने का अवसर आ चुका है। संतों पर लगातार अत्याचार करनेवाली चाहे कोई सरकार हो या संगठन, वे याद रखें कि अब भारत की धर्मप्रेमी जनता, देशप्रेमी युवा जागृत हो चुका है।

हाजी तैयब कुरैशीजी, अध्यक्ष, सेनापति मुस्लिम संघ समिति : दुर्भाग्यवश सरकार चाहे कोई भी रही हो, धर्माचार्यों पर जुल्म बराबर होता रहा है। अतः हमें संगठित होना होगा। दूसरा, हमारी सरकार पूरे देश से गौ-मांस निर्यात करती है, चमड़ों के उत्पाद भेजती है। इससे ४० खरब रुपये आते हैं। उन ४० खरब रुपयों को न छोड़ने की वजह से गौ-हत्या हो रही है। मैं गाय की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहा हूँ और मुस्लिम समाज को जागृत करता हूँ कि आप लोग संगठित हो के गाय की रक्षा में हिन्दुओं से भी आगे निकलकर आयें। और यह जुर्म जो इस देश में हो रहा है, अगर आज भी बंद नहीं होगा तो कब होगा ? गाय हमारी धार्मिक और आर्थिक पहचान है। यह सनातन धर्म तमाम विश्व के लिए है।

श्री पवन शास्त्रीजी, 'विश्व हिन्दू परिषद' केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल के सदस्य, प्रवक्ता, श्रीरामजन्मभूमि न्यास : अयोध्या की संत-शक्ति बापूजी के साथ थी, है और रहेगी ! एक अधिकृत व्यक्ति होने के नाते, 'श्रीरामजन्मभूमि न्यास' के अध्यक्ष महंत श्री नृत्यगोपालदासजी का भतीजा और शिष्य होने के नाते तथा 'विश्व हिन्दू परिषद' के केन्द्रीय मार्गदर्शक मंडल का सदस्य होने के नाते सम्पूर्ण विश्व हिन्दू परिषद की ओर से सनातन धर्म के सभी अनुयायियों को मैं यह वचन देता हूँ कि संतों के सम्मान के लिए 'विश्व हिन्दू परिषद' की जहाँ भी आवश्यकता होगी, वहाँ हम सब कुछ कर गुजरेंगे।

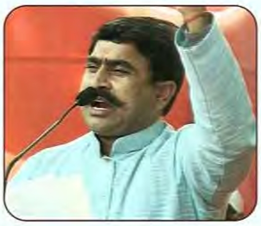

श्री चन्द्रशेखरजी आजाद, भारतीय गौ-क्रांति मंच, गायत्री परिवार : आज यहाँ उपस्थित भारतमाता के हर एक सुपुत्र के सिर पर टोपी लगी है, जिस पर लिखा है कि 'बापूजी निर्दोष हैं।' इससे बड़ा और प्रमाण कोई हो ही नहीं सकता। यदि बापूजी निर्दोष नहीं होते तो आज आप यहाँ नहीं होते और जो आज आपने आवाज बुलंद की है, वह आवाज बहुत जल्द बापूजी को बाहर लायेगी।

निरंजनी अखाड़ा के अवधूत महामंडलेश्वर श्री स्वात्मबोधानंद पुरीजी, जोधपुर से श्री श्रवणरामजी महाराज, योगगुरु स्वामी हर्षानंदजी, कैलाश आश्रम (ऋषिकेश) से श्री वासुदेवानंद गिरिजी, अयोध्या से श्री जालेश्वरजी महाराज, डॉ. मस्त बाबाजी आदि संतों ने भी उपस्थित होकर पूज्य बापूजी व उनके परिवार पर हो रहे अत्याचार का विरोध किया।

'मानवमित्र' अखबार के खिलाफ मामला दर्ज

मानवमित्र' अखबार के विरुद्ध एक साधक द्वारा अहमदाबाद मजिस्ट्रेट में भारतीय दंड संहिता की धारा २९५ (ए), ४९९, ५००, ५०१ व ५०२ के तहत मामला दर्ज किया गया है। फरियाद में बताया गया है कि दिनांक १५-१०-२०१३ को मानवमित्र समाचार पत्र में पृष्ठ ८ पर पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के बारे में छापी गयी खबर एकदम झूठी और आरोपी द्वारा उपजायी हुई थी। इस लेख में छापी गयी तमाम बातें आरोपी द्वारा उसके अखबार का प्रचार-प्रसार बढ़ाने तथा एक विश्वप्रसिद्ध संत के मान-सम्मान को भारी पैमाने पर नुकसान पहुँचाने और उन्हें माननेवाले करोड़ों लोगों की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने के उद्देश्य से छापी गयी थी। इस लेख में आरोपी ने लिखा है कि लेख की बातें उसे पुलिस तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा बतायी गयी हैं परंतु ऐसा कोई प्रमाण लेख में दर्शाया नहीं गया। इन बातों पर गौर करते हुए माननीय दंडाधिकारी ने पुलिस को जाँच के आदेश दिये हैं।

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१) पुण्यदायिनी जीवनगाथा,
ज्ञान-भक्ति भंडार है।
१०८ पाठ करे जो इसके,
उसका संकल्प साकार है ॥
(२) परमार्थ में मुझे लगाये, मैं हूँ उनका मीत।
पल-पल मेरा सार्थक करे, निश्चय उसकी जीत ॥
(३) माँ के जैसी पूजित है,
सब देवों का जिसमें वास।
धरती पर करे अमृत वर्षा,
सूर्य नाड़ी से पिये प्रकाश ॥

उत्तर : (१) श्री आशारामायण (२) समय (३) तुलसी माता

हमारी सभ्यता

भारत के संत-महापुरुष ऐसी महान परम्पराओं के संवाहक हैं, निर्माता हैं जिनके बल पर भारत आज भी अन्य देशों की तुलना में सुख-शांति, सौहार्द में सबसे आगे है। आज विदेश के लोगों को भी भारत के ऋषि-मुनियों, ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों की देन - योग, आत्मिक ज्ञान और ध्यान से आनंद, उत्साह और शांति मिल रही है।

आज भी हमारा भारत विश्वगुरु इसलिए है क्योंकि आज तक हमारे संस्कारों की, हमारी सभ्यता की थाह को पूरे विश्व में कोई पा नहीं सका और न पा सकेगा।

धैर्य व सूझबूझ के धनी वीर शिवाजी

(छत्रपति शिवाजी जयंती : १९ मार्च)

बीजापुर (कर्नाटक) के युद्ध में छत्रपति शिवाजी की वीरता का वर्णन सुनकर औरंगजेब ने उन्हें उपहार भेजे तथा आगरा आने का निमंत्रण-पत्र भेजा। यह वचन भी दिया कि उन्हें दरबार में उचित सम्मान दिया जायेगा और वे जब चाहें दक्षिण वापस लौट सकते हैं।

शिवाजी ५०० से भी अधिक मील की यात्रा तय कर आगरा पहुँचे परंतु वहाँ का नजारा कुछ अलग ही देखने को मिला। उन्हें राजदरबार में साधारण मनसबदारों के साथ १ घंटे तक खड़ा कर दिया गया। और जब शिवाजी ने उपहार भेंट किये तब औरंगजेब ने कोई उत्तर नहीं दिया। राजकुमारों, सामंतों को पान दिये गये परंतु शिवाजी को नहीं दिया गया। शिवाजी के लिए यह अपमान असह्य हो गया। वे औरंगजेब को पीठ देकर दरबार से चले गये। एक बेगम, दरबारियों व कुछ सामंतों ने औरंगजेब को शिवाजी के विरुद्ध खूब भड़काया।

औरंगजेब ने निश्चय किया कि शिवाजी को मरवा दिया जाय। परंतु उससे पूर्व उसने जयसिंह से यह जान लेना आवश्यक समझा कि उसने क्या-क्या सौगंध खाकर शिवाजी को आगरा भेजा था। जयसिंह उस समय दक्षिण में था। अतः जवाब आने तक शिवाजी को नजरबंद कर दिया गया।

शिवाजी चाल समझ गये किंतु उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। शांत होकर अपने गुरुदेव का स्मरण किया। उन्हें एक सुंदर उपाय सूझा। उन्होंने दो सेवकों को छोड़कर बाकी सबको वापस भेज दिया और बीमारी का बहाना कर पलंग पर लेट गये। बाहर निकलना पूरी तरह बंद कर दिया। बीमारी ठीक करने के लिए ब्राह्मणों व साधुओं के यहाँ बड़े-बड़े टोकरों में फल व मिठाइयाँ भरकर भेंट में भेजी जाने लगीं, जिन्हें शाम को बाँस के डंडों से कंधे पर लटका के दो कहार शिवाजी के कक्ष से बाहर ले जाते थे। शुरुआत में तो पहरेदार टोकरियों की अच्छी तरह से जाँच करते थे परंतु जब उन्होंने देखा कि वास्तव में फल व मिठाइयाँ ही भेजी जाती हैं तो धीरे-धीरे उन्होंने निरीक्षण करना बंद कर दिया।

शिवाजी इसीकी प्रतीक्षा में थे। एक दिन उन्होंने पहरेदारों को कहला भेजा कि उनकी बीमारी बहुत बढ़ गयी है अतः कोई उन्हें तंग न करे। उनके पलंग पर हीरोजी फर्जन्द (शिवाजी का अंगरक्षक), जिसकी शक्ल शिवाजी से मिलती थी, लेट गया। उसने मुँह ढँक लिया तथा हाथ में शिवाजी का सोने का कड़ा पहनकर हाथ चादर से बाहर निकाले रखा। शाम को शिवाजी तथा सम्भाजी दो टोकरों में लेट गये, उनके ऊपर फल व पत्ते अच्छी तरह से रख दिये गये। कहार उन्हें लेकर चलते बने। पहरेदारों ने रोज की तरह कहारों को जाने दिया। अँधेरी रात में शहर के बाहर एक निर्जन स्थान पर कहारों ने टोकरियाँ रखीं और मजदूरी लेकर चले गये। शिवाजी के छूट निकलने के दूसरे दिन जब हीरोजी भी चला गया, उसके लगभग एक घंटे बाद पहरेदारों को शंका हुई। धड़कते हृदय से अंदर जाकर देखा तो वे हक्के-बक्के रह गये कि कड़ा पहरा होते हुए भी शिवाजी हवा बनकर कहाँ उड़ गये! सब जगह छान मारा किंतु केवल निराशा ही हाथ लगी। शिवाजी के इस कारनामे को औरंगजेब जीवनपर्यंत नहीं भूल सका। चारों तरफ जहाँ मृत्यु अपना पहरा जमाये हुई थी, ऐसी स्थिति में भी शिवाजी ने गुरु की कृपा का सहारा लिया, उचित समय की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा की और मौत के शिकंजे से छूट निकलने में सफल हुए।

इच्छित संतान प्राप्त करने के उपाय

उत्तम संतानप्राप्ति के लिए ५ जनवरी २०१४ से १८ सितम्बर २०१४ तक का समय गर्भाधान के लिए अति उत्तम है ।

संतान को भक्त, योगी या आत्मज्ञानी महापुरुष बनाने की इच्छा हो तो माता-पिता हृदयपूर्वक गीता, भागवत, रामायण, श्री योगवासिष्ठ जैसे सद्ग्रंथों का रसपूर्वक श्रवण, पठन, मनन-चिंतन करें । प्राणायाम, ध्यान, आसन, कीर्तन, जप आदि करें । आपस में भक्ति, योग, आत्मज्ञान संबंधी चर्चा करें । यदि माता की क्षमता ये सभी करने की न हो तो केवल मानसिक जप, भगवत्कथा-श्रवण एवं आत्मज्ञान का श्रवण व विचार करे, जिससे माँ के शरीर में उत्पन्न हो रही धातुओं के अणु-प्रतिअणु में ये संस्कार समा जायें व गर्भस्थ बालक पर उसका प्रभाव पड़े । माँ को खूब रुचिपूर्वक भगवान की लीलाओं, संत-चरित्रों, भक्तकथाओं, आत्मज्ञानी महापुरुषों के सत्संग-प्रवचनों को पढ़ना-सुनना चाहिए। भगवान, सद्गुरुदेव जिनमें भी श्रद्धा हो, उनका सतत ध्यान-स्मरण करना चाहिए।

महापराक्रमी हनुमानजी, अर्जुन, भीम, शिवाजी जैसे वीर पुत्रों की इच्छा करनेवाले माता-पिता इनके पराक्रमों का वर्णन अत्यंत रसपूर्वक सुनें-पढ़ें व उसका सतत चिंतन करें।

जिन्हें जिस प्रकार की संतान की इच्छा हो, उन्हें मन में उसी प्रकार के विचारों का मंथन करना चाहिए एवं उसके अनुरूप क्रियाएँ रसपूर्वक करनी चाहिए, जिससे उनके यहाँ इच्छित संस्कारों से सम्पन्न संतान आ सके एवं सद्गुणों को इच्छानुसार गर्भस्थ बालक में प्रस्थापित किया जा सके । इतिहास को देखें तो धर्मबल व नीतिबल से रहित रावण, हिरण्यकशिपु, कंस, दुर्योधन, सिकंदर, हिटलर, औरंगजेब जैसी संतानों ने अपनी असाधारण शक्ति से जगत में निरर्थक लड़ाइयाँ करके समाज को सुख-शांतिमय जीवन से वंचित किया । इसलिए धर्मबल व नीतिबल से युक्त उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए माता-पिता पहले से ही तैयार हो जायें तो उनका व विश्व का दोनों का मंगल होगा।

गर्भाधान पूर्व की सावधानियाँ

उत्तम संतानप्राप्ति हेतु सर्वप्रथम पति-पत्नी का तन-मन स्वस्थ होना चाहिए । वैद्यकीय सलाह अनुसार शारीरिक शुद्धि (शास्त्रोक्त शोधन कर्म के द्वारा) आसन-प्राणायाम, आहार-विहार से कम-से-कम तीन महीनों तक करें । क्योंकि नया वीर्य ९० दिन में संस्कारित एवं पुष्ट होता है । मानसिक स्वस्थता के लिए पूज्य

बापूजी के सान्निध्य में आयोजित 'ध्यानयोग शिविर' में भाग लें एवं मंत्रजप, अनुष्ठान, ध्यान, योग व ब्रह्मचर्य का पालन करें। (क्रमशः)

उत्तम संतानप्राप्ति के लिए

ग्रह-नक्षत्रों का असर मनुष्यों-प्राणियों पर ज्यादा होता है। बृहस्पति, बुध, शुक्र, चन्द्र - ये शुभ ग्रह हैं। इनमें भी बृहस्पति अत्यंत शुभ ग्रह है। बृहस्पति जब बलवान होता है, तब पुण्यात्माएँ पृथ्वी पर अवतरित होती हैं। बलवान बृहस्पति जिसकी जन्मकुंडली में होता है, उसमें आध्यात्मिकता, ईमानदारी, सच्चारित्र्य, विद्या और उत्तम विशेषताएँ होती हैं। इसलिए गर्भाधान ऐसे समय में होना चाहिए, जिससे बच्चे का जन्म बलवान उत्तम ग्रहों की स्थिति में हो।

५ जनवरी २०१४ से १८ सितम्बर २०१४ तक का समय गर्भाधान के लिए अतिशय उत्तम है। उत्तम संतान की इच्छावाले दम्पति को अधिकाधिक गुरुमंत्र का जप या हो सके तो पुरुष को ४०-४० दिन के तथा महिला को २१-२१ दिन के दो-तीन अनुष्ठान करके उत्तम संतान हेतु परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए, तत्पश्चात् गर्भाधान करना चाहिए। गर्भाधान से पहले कम-से-कम १-२ माह का ब्रह्मचर्य-व्रत अवश्य रखें। गाय का दूध, घी, खीर और सात्त्विक आहार लें। अंडा, मांस, मदिरा, तम्बाकू, बासी भोजन, फास्टफूड जैसे तामसी पदार्थों का सेवन न करें। गर्भाधान के बाद ज्यों-ज्यों गर्भ बढ़े, त्यों-त्यों स्त्री को वजन उठाना, हर प्रकार की वाहन-यात्रा, व्यायाम, नीचे झुककर काम करना (जैसे झाड़ू-पोंछा) आदि कार्यों से बचते रहना चाहिए। लाल मिर्च, हरी मिर्च, हींग, मेथी, राई, गाजर, कपासिया तेल (Cotton seed oil), गर्म दवाइयों और गर्म पदार्थों का सेवन न करें।

नौकरी करनेवाली महिलाओं को गर्भाधान के दिनों में और बाद के दिनों में शारीरिक-मानसिक आराम पर खास ध्यान देना चाहिए। पुरुषों को भी शारीरिक आराम और मानसिक प्रसन्नता के बाद ही गर्भाधान के लिए प्रवृत्त होना योग्य है। रात्रि-जागरण बल, बुद्धि, स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर करता है। काम-धंधा है तब भी रात्रि की नींद का फायदा लिया करो। तुमने देखा होगा कि ट्रक ड्राइवर का श्रम तुम्हारे-हमारे से ज्यादा है लेकिन कोई बढ़िया मकान या बढ़िया गाड़ीवाला नहीं मिलेगा। तन-मन-बुद्धि का रात्रि की नींद में जितना विकास होता है, उतना दिन की नींद में नहीं होता।

***

(पृष्ठ १९ से 'सत्संगी माँ की सुंदर सीख...'का शेष भाग) योग्यतावाली हो तो तू अभिमानी न बनना बल्कि उन्हें भी मददरूप होना। तभी तेरी योग्यता खिलेगी और तू सबके स्नेह की पात्र बनेगी।''

कालिंदी को सत्संगी माँ से आदर्श ननद व आदर्श बहू बनने का सुंदर पाठ सीखने को मिला। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। इतने में मनोरमा बाजार से लौटी। कालिंदी ने दौड़कर उसके हाथ से भारी थैला ले लिया और कहा : ''भाभी ! सुबह के गलत व्यवहार के लिए मुझे क्षमा करना।'' भाभी को इसी प्रेम की चाह थी।

कुछ ही क्षणों में रसोईघर ननद-भाभी की मधुर प्रेमभरी चहचहाहट से मधुमय बन गया। सविता का मुख संतोष और आनंद से चमक उठा। सत्संग से प्राप्त सूझबूझ ने घर में कलह पैदा होने से पहले ही प्रेमामृत की ऐसी वर्षा करवा दी कि घर में स्नेह, सहानुभूति, सद्भाव की गंगा बहने लगी और खुशहाली छा गयी।

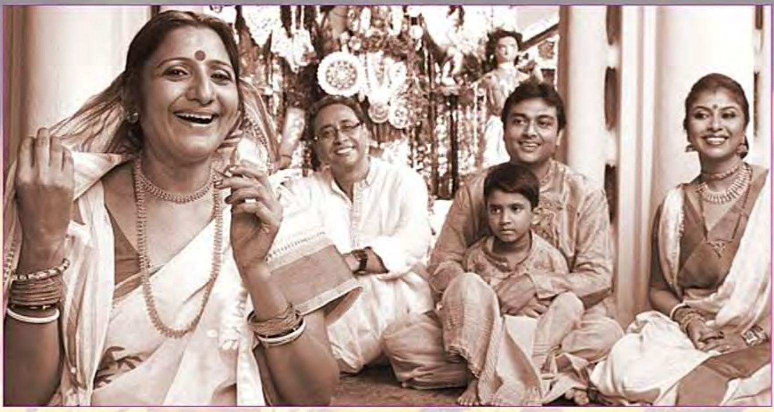

सत्संगी माँ की सुंदर सीख ने घर में बहायी प्रेम की गंगा

सविता की नयी बहू मनोरमा को ससुराल में आये अभी कुछ दिन ही हुए थे। वह घर में कहीं दिखायी नहीं दे रही थी तो उसने अपनी बेटी से पूछा : ''कालिंदी ! तेरी भाभी कहाँ है ?''

कालिंदी : ''सब्जी लेने बाजार गयी है।''

''अकेले ! नये शहर में ! तू साथ नहीं गयी ?''

''तो क्या हुआ माँ ! भाभी कोई छोटी बच्ची थोड़े ही है !''

सविता के चेहरे पर असंतोष व गम्भीरता छा गयी। फिर सहसा बोल उठी : ''सुबह मैंने तुम्हारी तेज आवाज सुनी थी। क्या हुआ था ?''

''हाँ, भाभी पूछ रही थी कि सब्जी, दाल में नमक-मिर्च कितनी डालनी है ? तो मैंने कह दिया कि ''मैं तो कुछ नहीं जानती, जितना डालना है डालो।'' भाभी ने आपसे कुछ कहा क्या ?''

''नहीं, पर यह तूने ठीक नहीं किया बेटी !''

कालिंदी को अपनी गलती समझ न आयी। तब सत्संगी सविता ने प्रेम से उसे पास बैठाया और अपने जीवन का अनुभव बताने लगी : ''शादी के बाद जब मैं इस घर में पहली बार आयी थी तो मुझे रसोई बनाना बिल्कुल नहीं आता था। मेरी सौतेली माँ थी, उसकी अभिलाषा थी कि मुझे रसोई सँभालना नहीं आयेगा तो मैं ससुराल में दुःखी होऊँगी, प्रताड़ना सहूँगी। अतः उसने मुझे रसोई का काम नहीं सिखाया। यहाँ आते ही मुझे रसोईघर सँभालने को कहा गया तो मैं अवाक् रह गयी। रसोईघर में गयी तो आँखों से आँसुओं की धाराएँ बह चलीं। परंतु विपदा की उन घड़ियों में मेरी ननद विमला ने मुझे सँभाल लिया। मेरा सब हाल जानकर उसने बड़े प्यार से मेरे आँसू पोंछे फिर बोली : ''भाभी ! चिंता मत करो। मैं यहाँ एक महीने तक हूँ। मैं आपको सब सिखा दूँगी।'' और एक के बदले दो माह रह के उसने मुझे सारा काम सिखा दिया। किसीको पता ही नहीं चल पाया और उसने भी किसीको नहीं बताया और न कभी मुझे कोई ताना कसा। बल्कि जब कभी किसी काम में कोई गलती हो जाती तो वह अपने सिर ले लेती और अच्छे काम में मुझे आगे कर देती थी। उसके प्यारभरे व्यवहार से वह मेरी ननद नहीं, सगी बहन बन गयी थी।

तेरी मनोरमा भाभी तो सब काम जानती है पर यहाँ के रीति-रिवाज तो वह नहीं जानती। तुझे उसकी मदद करनी चाहिए। उससे ऐसा कठोर व्यवहार करना तेरी गलती है। तू उसकी ननद नहीं, बहन बनकर उससे व्यवहार कर, तभी तुझे भी तेरी ससुराल में अपनी ननद से स्नेह, सहानुभूति भरा व्यवहार मिलेगा।

बेटी ! तू ससुराल में जाय और वहाँ अगर तेरी जेठानी या देवरानी तुझसे कम **(शेष पृष्ठ १८ पर)**

विभु तत्त्व को जानकर व्यापक हो जाओ

(श्रीराम नवमी : ८ अप्रैल)

संत श्री एकनाथजी महाराज ने 'भावार्थ रामायण' के द्वारा तात्त्विक ज्ञान की दृष्टि से भगवान श्रीराम के जीवन-चरित्र का निरूपण किया है, जो अध्यात्म के जिज्ञासुओं तथा आत्मकल्याण के इच्छुकों के लिए बहुत ही उपयोगी है।

भक्त की आत्मानंद में लीन हो जाने की स्थिति का वर्णन करते हुए संत एकनाथजी महाराज कहते हैं : ''जो त्रिभुवन में नहीं समा पाते वे ब्रह्मस्वरूप श्रीराम महारानी कौसल्या के गर्भ में स्थित थे। जो ब्रह्म त्रिभुवन में नहीं समा पाता, वह स्वयं श्रद्धाभाव में समा जाता है। साधक के मन में विशुद्ध भक्ति उत्पन्न होने पर उसे अनुभव होता है कि हृदयरूपी आकाश में सम्पूर्ण ब्रह्म (व्याप्त हो गया) है। श्री रघुनंदन राम के रूप में पूर्ण ब्रह्म पूर्ण रूप से कौसल्या के गर्भ में आने पर वे अन्यान्य बातों के प्रति आत्मीयता का त्याग करके प्रेम से एकांत में रहने लगीं। उनमें देह के प्रति अनासक्त होने के लक्षण दिखाई दे रहे थे। यही अत्यधिक दृढ़ वैराग्य का लक्षण होता है। उन्होंने अपनी कल्पना का दमन करके निर्विकल्प कल्पतरु जैसे राम का आश्रय ग्रहण किया था, अतः निर्विकल्प समाधि-अवस्था को वे प्राप्त हुई थीं।

उनकी प्रवृत्ति सांसारिक बातों से विमुख होकर परमार्थ की ओर हो गयी थी। वे सृष्टि को आत्मवत् देखने लगी थीं। जैसे किसी योगी को उन्मनी अवस्था प्राप्त हुई हो, इस प्रकार बैठी हुई अपनी धर्मपत्नी को देखकर राजा दशरथ आनंदित हुए। वे बोले : ''मन में जो दोहद (इच्छाएँ) हों, बता दो।'' फिर भी उन्होंने उनके अस्तित्व को नहीं देखा। उनकी मनोवृत्ति रामस्वरूप में लवलीन थी। इसलिए वे व्यक्त तथा अव्यक्त को नहीं देख रही थीं। उनके उदर में निराकार ब्रह्म गर्भरूप में उदित था। इसलिए उन्हें देह के विषय में कोई स्मृति नहीं हो रही थी। वे स्तब्ध होकर श्रीराम को देख रही थीं। यह देखकर राजा ने कहा : ''हाय ! यह सुंदरी किस प्रकार भूत-पिशाच की पकड़ में आकर बहक गयी है ! पुत्रप्राप्ति की मेरी कामना किस प्रकार सिद्ध होगी ? पुरुषोत्तम आत्माराम रघुवीर इसे किस प्रकार सिद्धि को प्राप्त करा देंगे ?''

रामनाम सुनते ही कौसल्या ने आँखें खोलीं तो सृष्टि को राममय देखा। उनका सृष्टि से संबंध टूट गया था। देह में विदेह राम व्याप्त थे। जब उन्होंने दसों दिशाओं की ओर देखा, तब उनमें रामरूप की मुद्रा अंकित हुई

दिखाई दी। उनके श्वासोच्छ्वास में राम व्याप्त थे। वृक्ष, लताएँ और मंडप सबको वे रामरूप देख रही थीं। जो उदर में उत्पन्न हुए थे, वही समस्त अंगों में छलक रहे थे। उनके लिए समस्त संसार ब्रह्मरूप हो गया था।''

श्री एकनाथजी महाराज परम अवस्था में पहुँचे साधक के बारे में कहते हैं : ''जब साधक को ज्ञान प्राप्त हो जाता है तो उसे अनुभव हो जाता है कि ब्रह्मत्व, ब्रह्मांड तथा ब्रह्म से उत्पन्न पंच महाभूत तथा जीव-अजीव की परम्परा ब्रह्म से भिन्न नहीं है। तब वह अनुभव करता है कि मैं ब्रह्म हूँ, मेरा शत्रु भी ब्रह्म है, मेरे सन्मित्र, बंधुजन ब्रह्म ही हैं।''

ब्रह्म को धारण करने से सर्वत्र ब्रह्मदर्शन की जो दृष्टि, ज्ञानमयी समाधि की जो स्थिति कौसल्याजी की हुई थी, आनंदमयी माँ, रानी मदालसा या साँईं लीलाशाहजी महाराज, कबीरजी, नानकजी व अन्य सत्पुरुषों की हुई थी, वही आपकी भी हो सकती है।

आप भी अपने भीतर आत्माराम को धारण करो। अंतर्मुख होकर तो माई-भाई, रोगी-निरोगी, बाल-वृद्ध, सभी लोग आत्मराम को पा सकते हैं। मनुष्यमात्र आत्मप्राप्ति का अधिकारी है। राजा दशरथ के घर में भगवान राम ने अवतार लिया था पर राम केवल इतने ही नहीं हैं बल्कि जो सदा, सर्वकाल और सर्वदेश में व्याप्त हैं और अपना आत्मा बनकर भी बैठे हैं वही राम हैं।

एक राम घट-घट में बोले,
दूजो राम दशरथ घर डोले।
तीजो राम का सकल पसारा,
ब्रह्म राम है सबसे न्यारा ॥

जितना हम राम को दिव्य समझकर उनकी उपासना करेंगे, उतने ही हम दिव्यता की ओर बढ़ते जायेंगे। हम राम को जितना व्यापक मानेंगे उतने हम भी व्यापक होते जायेंगे और व्यापक होते-होते एक ऐसी वेला आयेगी जब सारी सीमाएँ, संकीर्णताएँ ध्वस्त होकर असीम रामतत्त्व का, अपने अद्वैत निजस्वरूप का ज्ञान हो जायेगा।

अनमोल युक्तियाँ - पूज्य बापूजी

किसीको कितना भी कोसते रहोगे, वह जल्दी नहीं सुधरेगा लेकिन उसका भला चाहते हुए अंदर से सोचोगे तो उसका भला जब होगा तब होगा लेकिन आपका हृदय अभी से ही भला हो जायेगा। और भले हृदय में भले-में-भले भगवान सबका भला चाहते हैं। भगवान की सत्ता आपके द्वारा काम करने लगेगी।

बेटा मानता नहीं अथवा बेटी मानती नहीं या पति मानता नहीं तो मन-ही-मन उनका हाथ भगवान के चरणों में दे दो, 'प्रभु ! अब आप ही इनकी बुद्धि बदल सकते हो। अब मैं तो थक गया... थक गयी...। और इन्हें अपना मानने का मेरा दोष था लेकिन सब आपके हैं। आपने रामायण में कहा है : सब मम प्रिय सब मम उपजाए। आपका वचन है महाराज ! आपका वचन सत्य होता है। तो मेरे इन पति का हाथ आपके हाथ में देती हूँ। 'ये दारू नहीं छोड़ते, पान-मसाला नहीं छोड़ते, ऐसे हैं... वैसे हैं...' करके मैं अपनी नींद हराम कर रही हूँ। 'बेटा ऐसा है, फलाना ऐसा है...' महाराज ! ये जैसे भी हैं आपके उपजाये हुए आपको सौंपता हूँ। हरि... हरि...'

इससे आपका स्वभाव भी सुधरेगा, उनका स्वभाव भी सुधर जायेगा। ऐ हे... ! क्या-क्या तरकीब है ! ऐसा नहीं कि रामजी आकाश से आयेंगे और आकर उनके अंदर घुसेंगे तब स्वभाव बदलेगा, नहीं। ये ईश्वरीय विधान है, व्यवस्था है। आप निश्चिंत हो जायेंगे, भगवान में शांत हो जायेंगे तो आपके अंतर्यामी आत्माराम से ही उनका सब बदल जायेगा।

बुलंदियों तक पहुँचानेवाले दो पंख

प्राणशक्ति और ज्ञानशक्ति (बुद्धिशक्ति)

- पूज्य बापूजी

बच्चों को प्राणशक्ति और ज्ञानशक्ति (बुद्धिशक्ति) - इन दो शक्तियों की जरूरत है। ये दोनों बढ़ गयीं तो व्यक्ति सारी दुनिया को आश्चर्य में डाल सकता है। जिसके जीवन में ज्ञानदाता एवं प्राणशक्ति बढ़ाने की कला जाननेवाले सद्गुरु नहीं हैं, वह बड़ा होते हुए भी बच्चा है और जिसके जीवन में प्राणशक्ति और ज्ञानशक्ति बढ़ानेवाले सद्गुरु हैं, वह बच्चा भी कभी नहीं रहता कच्चा ! वह छोटे-से-छोटा बच्चा भी बड़ी बुलंदियों तक पहुँचानेवाले काम कर सकता है।

मगधनरेश कुमारगुप्त के १४ साल के बेटे स्कंदगुप्त ने हूण प्रदेश के दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिये थे। मेरे गुरुजी की प्राणशक्ति, ज्ञानशक्ति विकसित हुई थी तो उनकी आज्ञा से नीम का पेड़ भी खिसक गया उचित स्थान पर, जहाँ झूलेलालवालों की हद लगती थी। वहाँ दोनों समाजों में सुलह का संगीत लहराने लगा। 'लीलारामजी' में से 'लीलाशाहजी' कहकर मुसलमान भी नवाजने लगे। प्राणशक्ति और ज्ञानशक्ति बढ़ जाय तो संकल्प से सब कुछ हो सकता है।

प्राणशक्ति बढ़ाने के उपाय

(१) पोषक आहार : ब्रेड, बिस्कुट, मिठाइयाँ, फास्टफूड, कोल्डड्रिंक्स आदि बाजारू खाद्य पदार्थों से जीवनशक्ति क्षीण होती है। प्राकृतिक आहार जैसे फल, सब्जी, गाय का दूध तथा पाचनशक्ति के अनुसार ऋतु-अनुकूल आहार लेने से जीवनशक्ति का विकास होता है। सुबह ९ से ११ और शाम को ५ से ७ बजे के बीच भोजन करनेवाले की प्राणशक्ति बढ़िया रहती है।

(२) व्यायाम-प्राणायाम : ब्राह्ममुहूर्त (सूर्योदय से सवा दो घंटे पूर्व से सूर्योदय तक) में सभी दिशाओं की हवा सब प्रकार के दोषों से रहित होती है। अतः इस वेला में वायुसेवन तथा दौड़, दीर्घ श्वसन आदि बहुत ही हितकर होता है। प्रातः ४ से ५ बजे के बीच प्राणायाम करें तो प्राणशक्ति खूब बढ़ेगी।

(३) संयम : बॉयफ्रेंड, गर्लफ्रेंड बनाने से जीवनीशक्ति व संयम का नाश होता है। जो लड़के लड़कियों से, लड़कियाँ लड़कों से दोस्ती करती हैं, उनकी प्राणशक्ति दब्बू बन जाती है। लड़की लड़कियों को सहेली बनाये, लड़के लड़कों को दोस्त बनाये तो संयम से प्राणशक्ति व जीवनीशक्ति मजबूत होती है। सदाचरण और ब्रह्मचर्य का पालन करें। साथ ही कब खाना - क्या खाना, कब बोलना - क्या बोलना, इसका भी संयम होना चाहिए।

ज्ञानशक्ति बढ़ाने के उपाय

(१) तटस्थता : बुद्धि में तटस्थता हो, पक्षपात न हो तो ज्ञानशक्ति बढ़ती है। अपनों के प्रति न्याय और दूसरों के प्रति उदारता का व्यवहार करो। **ॐकार का जप करते-करते सो जाओगे तो ज्ञानशक्ति तो बढ़ेगी ही, अनुमान शक्ति और अनुशासनीय शक्ति भी बढ़ेगी।**

(२) समता : किसी भी खुशामद से तुम फूलो नहीं और किसी भी झूठी निंदा से सिकुड़ो नहीं। सबसे सम व्यवहार करने तथा सुख-दुःख में सम रहने का अभ्यास बढ़ाने से ज्ञानशक्ति बढ़ती है। इससे आप मेधावी बन जाओगे। किस समय क्या करना है इसकी सूझबूझ और त्वरित निर्णय की क्षमता भी आपमें आयेगी। समत्वयोग समस्त योगों में शिरोमणि है। पचास वर्ष नंगे पैर घूमने की तपस्या, बीसों वर्ष के व्रत-उपवास चित्त की दो क्षण की समता की बराबरी नहीं कर सकते।

आप ऐसे लोगों से संबंध रखो कि जिनसे आपकी समझ की शक्ति बढ़े, जीवन में आनेवाले सुख-दुःख की तरंगों का अपने भीतर शमन करने की ताकत आये, समता बढ़े, जीवन तेजस्वी बने।

(३) विवेक : सत्संग का विवेक, शास्त्रसंबंधी विवेक हो तो ज्ञानशक्ति बढ़ती है। 'नित्य क्या है, अनित्य क्या है ? करणीय क्या है, अकरणीय क्या है ?' आदि का विवेक होना चाहिए। आवेश में आकर कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। मन में जो आये वह करने लग गये, ऐसा नहीं। विचार करना चाहिए कि मेरी इस चेष्टा का परिणाम क्या होगा ? श्रेष्ठ लोग, गुरु या भगवान देखें-सुनें तो क्या होगा ? विवेकरूपी चौकीदार रहेगा तो बहुत सारी विपदाओं से, पतन के प्रसंगों से ऐसे ही बच जाओगे।

वसिष्ठजी कहते हैं : ''हे रामजी ! जिस पुरुष ने शास्त्रीय विचार का आश्रय लिया है, वह सद्विचार की दृढ़ता से जिसकी वांछा (इच्छा) करता है उसको पाता है। इससे सद्विचार उसका परम मित्र है। सद्विचारवान पुरुष आपदा में नहीं फँसता और जो कुछ अविचार से क्रिया करते हैं वह दुःख का कारण होती है। जहाँ अविचार है वहाँ दुःख है, जहाँ सद्विचार है वहाँ सुख है। हे रामजी ! शास्त्रीय विचार से रहित पुरुष बड़ा कष्ट पाता है। इससे एक क्षण भी विचाररहित नहीं रहना।''

भगवान को एकटक देखकर 'ॐ' का जप करने से प्राणशक्ति और ज्ञानशक्ति दोनों निखरती हैं। ये दोनों शक्तियाँ जितने अंश में विकसित होती हैं, उतने अंश में जीवन सुख, सम्पदा, आयु, आरोग्य और पुष्टि से भर जाता है। ईश्वर, गुरु, ॐकार का भ्रूमध्य में थोड़ी देर ध्यान एवं शास्त्र-अध्ययन करने से विचारशक्ति, बुद्धिशक्ति, प्राणशक्ति का खजाना खिलने लगता है। सही सूझबूझ का धनी बना देता है।

पुण्यदायी तिथियाँ

२३ मार्च : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि ८-१३ तक)

२७ मार्च : पापमोचनी एकादशी (सर्वपापनाशक व्रत। माहात्म्य पढ़ने-सुनने से हजार गौदान का फल), ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज प्राकट्य दिवस

२८ मार्च : वारुणी योग (सुबह ७-५३ से सूर्यास्त तक) (गंगादि तीर्थ में स्नान, दान, उपवास १०० सूर्यग्रहण के समान फलदायी)

३१ मार्च : राष्ट्रीय चैत्री नूतन वर्ष वि.सं. २०७१ प्रारम्भ, गुडी पड़वा (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक), चैत्री नवरात्र प्रारम्भ

१ अप्रैल : चेटीचंड

६ अप्रैल : रविवारी सप्तमी (सूर्योदय से रात्रि १२-५५ तक)

८ अप्रैल : श्रीराम नवमी

११ अप्रैल : कामदा एकादशी (ब्रह्महत्या आदि पापों तथा पिशाचत्व आदि दोषों का नाश करनेवाला व्रत)

१४ अप्रैल : व्रत पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती (उपवास), चैत्र संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर ११-४० तक)

१५ अप्रैल : चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नानारम्भ

२० अप्रैल : पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का ७४वाँ अवतरण दिवस

जब भगवान तक पहुँची चिट्ठी

- पूज्य बापूजी

एक बालक था मुकुंद और उसके भाई का नाम था अनंत। अनंत और उनके पिताजी के नाम पत्र आते लेकिन नन्हा मुकुंद सोचता कि 'मेरे को कोई पत्र ही नहीं लिखता !' अनंत उसे चिढ़ाता था कि ''तुम्हें कोई पत्र नहीं लिखता। मुझे कितने मित्र पत्र लिखते हैं, पिताजी को भी कितने लोग पत्र लिखते हैं ! तेरे को कोई पूछता ही नहीं।''

मुकुंद भगवान की मूर्ति के आगे बैठ के बोलता : ''प्रभु ! मुझे कोई पत्र नहीं लिखता तो तुम ही लिखो न एक पत्र ! अच्छा ! तुम नहीं लिखोगे ? मैं पहले लिखूँ ऐसा !''

उठाया कागज-पेन और लिखा कि 'प्रभु ! मैं तो आपका भक्त हूँ, आप मेरे हैं। आप मेरे को एक चिट्ठी लिखो ।' इस प्रकार का भावनाभरा पत्र लिखा, और भी बहुत सारी बातें लिखीं । और 'सर्वेश्वर, सर्वव्यापक भगवान नारायण वैकुंठाधिपति को मिले' - ऐसा पता लिखकर वह पत्र डाक के डिब्बे में डाल दिया।

२ दिन, ४ दिन, १० दिन हुए तो मुकुंद ने डाकिये से पूछा : ''मेरी कोई चिट्ठी नहीं है ? मेरे भाई की तो चिट्ठियाँ आती हैं, मेरी चिट्ठी अभी तक नहीं आयी ?''

बोले : ''नहीं, तुझे कोई पत्र लिखता ही नहीं।''

१० दिन और बीते। मुकुंद पूजा के कमरे में जाकर भगवान को बोला : ''प्रभु ! २० दिन हो गये तुमको चिट्ठी लिखे। एक उत्तर भी नहीं दिया तुमने ! तुम व्यस्त होगे। सारी सृष्टि की व्यवस्था करते होगे पर मैं किसीको क्या बताऊँगा ? मेरा भाई मुझे चिढ़ाता है, 'तुझे कोई चिट्ठी नहीं लिखता।' अनंत को बोलने के लिए कुछ तो आप चिट्ठी लिखो न ! हे अच्युत ! हे गोविंद ! हे हरि ! हे प्रभुजी ! एक चिट्ठी लिखो न... !''

जैसे माँ-बाप के आगे बच्चे रोते हैं ऐसे ही भगवान की तस्वीर के आगे मुकुंद रोता गया : ''आप चिट्ठी भी नहीं लिखते ! मैं आपका नहीं हूँ क्या ?...'' बालक-हृदय... ! मुकुंद निर्दोष भाव से भगवान के आगे अपनी व्यथा रखता है : ''मैं तुम्हारी चिट्ठी की राह देखता हूँ और तुम मुझे पत्र नहीं लिखते हो ? **श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव... वासुदेवाय वासुदेवाय... !''**

जो संसार के आगे रोते हैं, वे रोते ही रहते हैं लेकिन जो भगवान के लिए रोते हैं, तड़पते हैं उनका रुदन व तड़प मिट जाती है और उनका रोना सदा के लिए हँसने में बदल जाता है। हम भी रोये थे। मुकुंद की नाईं नहीं तो दूसरे तरीके से।

मुकुंद रोते-रोते भगवान के आगे चुपचाप, सुनसान... सो गया। प्रकाश... प्रकाश... भगवान

की मूर्ति से तेज निकला। वह देखता है कि भगवान उसके निकट आ रहे हैं, सांत्वना दे रहे हैं और फिर मूर्ति में समा गये। आवाज आयी : ''ये बाहर की लेखनी और बाहर की चिट्ठियाँ बाहर की दुनिया के लिए हैं, तू तो मेरा है, मैं तेरा हूँ।''

उसको हुआ कि 'भगवान ने पत्र नहीं लिखा तो कोई बात नहीं, खुद आ गये।' अब उसकी भगवान के प्रति आस्था बढ़ गयी। जब साधक साधना करता है, एकटक भगवान या गुरु को देखता है तो उसको मानसिक दिव्यताओं के अनुभव होने लगते हैं।

जो जरा-जरा बात में झूठ बोलते हैं, उनकी मंत्रजप की शक्ति बिखर जाती है। जरा-जरा बात में कामी, क्रोधी, लोभी, मोही हो जाते हैं तो उनकी साधना की शक्ति क्षीण हो जाती है लेकिन आप थोड़े दिन मौन रह के थोड़ी साधना करो, कितनी शक्ति उभरती है अंदर!

मुकुंद को गुरुजी ने जो बताया था वह उसका पालन करता, नियमित अभ्यास करता, ध्यान व ॐकार का जप करता। और संकल्पशक्ति थी, संयमी था तो बड़ी शक्ति आयी! वही मुकुंद आगे चल के परमहंस योगानंदजी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

ढूँढ़ो तो जानें

श्रीमद् भगवद्गीता' के दसवें अध्याय में वर्णित भगवान की विभूतियों को नीचे दिये गये संकेतों के आधार पर वर्ग-पहेली से खोजें।

भगवान कहते हैं : ''मैं वेदों में ......, देवों में ....., इन्द्रियों में ...., एकादश रुद्रों में ...., यक्ष तथा राक्षसों में धन का स्वामी ....., आठ वसुओं में ...., शिखरवाले पर्वतों में .... पर्वत, पुरोहितों में ...., सेनापतियों में .... और जलाशयों में ...... हूँ।''

म	अ	ट	म	न	ज	द	द	ल	अ	थ	त
ग्नि	श्र	उ	न	प	न	इ	प	स	श्र	त	घ
र	श	द	श्र	स	र	स	न्द्र	स	थ	बृ	ध
ग	सा	श	न	ल	मु	इ	श्र	स	ह	श	उ
अ	क्ष	म	र	द्र	इ	फ	म	स्प	ग	ण	इ
र	ह	त	वे	स	ध	ल	ति	द	भ	ज	च
र	ह	ध	श्र	द	श	न	स	ड़	त	व	भ
सु	क	ल	रु	उ	म	श्र	ड	क	थ	शं	न
न	मे	ज	स	भ	स्कं	त	इ	न	क	प	ड
ज	स	रु	प	द	गु	स	स	र	ल	ल	न
त	स	ख	प	ग	ए	ह	ए	न	बे	ए	घ
ग	त	भ	च	र	म	म	प	र	ब	कु	र

उत्तर : सामवेद, इन्द्र, मन, शंकर, कुबेर, अग्नि, सुमेरु, बृहस्पति, स्कंद, समुद्र

अमृत प्रजापति गिरफ्तार

२५ फरवरी को गांधीनगर (गुजरात) में आयोजित राष्ट्रीय आयुर्वेद परिषद में डॉ. के.जी. पटेल के नाम से फर्जी पहचान बताकर लोडेड रिवॉल्वर ले के प्रवेश करते समय अमृत प्रजापति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। जब अमृत प्रजापति से कड़ी पूछताछ की गयी तब उसने सच्चाई उगलते हुए अपना सही नाम बताया। पुलिस ने उसके ऊपर झूठी पहचान बताने का केस दर्ज किया है। जरूरत पड़ने पर उस पर आर्म्स एक्ट के तहत कार्यवाही होगी। गौरतलब है कि इसी शख्स ने संत आशारामजी बापू पर अंधाधुंध, अनर्गल, तथ्यहीन आरोप लगाये थे।

(संदर्भ : दिव्य भास्कर, राजस्थान पत्रिका, गुजरात समाचार, न्यूज पोस्ट आदि)

यही अमृत प्रजापति इससे पहले भी कई आपराधिक प्रवृत्तियों में लिप्त पाया गया है।

(विस्तृत विवरण हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद', अक्टूबर २०१३, पृष्ठ ६)

वामदेव आदि संतों के वास्तविक स्वरूप का वर्णन

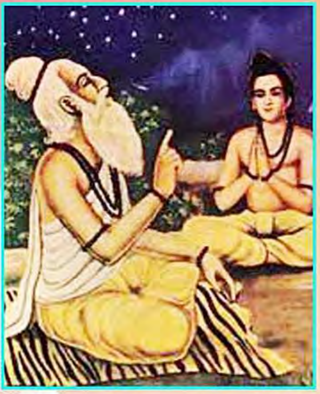

पराशर-मैत्रेय संवाद

(अंक २४९ से आगे)

ब्रह्मज्ञानी संतों का संग बड़ा ही दुर्लभ है। ध्रुव के कठोर तप से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उसे वरदान दिया, तब ध्रुव को वामदेव आदि संत मिले।

पराशर मुनि अपने शिष्य मैत्रेय को स्वरूप-बोध कराने के उद्देश्य से उन संतों के बारे में बताते हुए कहते हैं : ''वामदेव आदि संत देह-अभिमानरूपी पहरावे से नग्न थे; और यही कहते थे कि सर्वभोक्ता होते हुए भी हम अभोक्ता हैं और अभोक्ता होते हुए भी हम भोक्ता हैं। विकल्पसहित भी हम निर्विकल्प हैं। ऊँच-नीच, ग्रहण-त्याग आदि सर्वरूप हम ही हैं। यह सम्पूर्ण नाम-रूप प्रपंच हमारे स्वरूपभूत सूर्य तथा उसकी लाल किरणों की चमक है। स्वमाया से सविकार प्रतीत होते हुए भी हम निर्विकार हैं। उपाधि द्वारा कर्म करते हुए भी हम अकर्ता हैं और न करते हुए भी हम कर्ता हैं। निद्रासहित भी निद्रारहित हैं और निद्रारहित भी सनिद्र हैं। शरीरसहितभी अशरीर हैं, माया-अविद्या सहित भी माया-अविद्या से रहित हैं। निर्गुणरूप होते हुए भी हम स्वमाया से सगुणरूप हैं। मन-वाणी के अविषय होते हुए भी सर्वमन-वाणी के विषयरूप हम ही हैं।

जैसे स्वप्नद्रष्टा निद्रा से स्वप्न में सर्वरूप प्रतीत होता हुआ भी वास्तव में शुद्ध, निर्विकार, निर्विकल्प, अद्वितीय, असर्वरूप है। उसी प्रकार पंचकोशों से रहित भी हम चैतन्य पंचकोशरूप हैं। षड्भाव-विकारों से रहित होते हुए भी हम चैतन्य षड्भाव-विकाररूप हैं। तीनों गुणों के कार्य तथा प्राण और प्रकृतियों से असंग भी संग हैं तथा संग होते हुए भी असंग हैं।

इस रीति से सर्व पदार्थों को परस्पर उलट-पलट कर लेना। तात्पर्य यह है कि सर्वनाम-रूप स्वरूप होते हुए भी हम नाम-रूप से रहित हैं और सर्वनाम-रूप से रहित होते हुए भी हम चैतन्य नाम-रूप सहित हैं। सर्व शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध तथा पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्-तत्त्व तथा प्रकृति रूप होते हुए भी हम चैतन्य ही हैं और इनसे रहित भी हम ही चैतन्य हैं।''

('आध्यात्मिक विष्णु पुराण' से क्रमशः)

जाननेमात्र से कृतकृत्य !

- स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती

मैं हूँ' यह संस्कार नहीं, अनुभव है। 'मैं देह हूँ' यह नैसर्गिक ज्ञान है। 'मैं मनुष्य हूँ' यह सामाजिक ज्ञान है। 'मैं जीव हूँ' यह शास्त्रीय ज्ञान है। 'मैं ब्रह्म हूँ' यह मैं पर ब्रह्मत्व का अध्यारोप (झूठी कल्पना) नहीं बल्कि प्राकृत, सामाजिक, शास्त्रीय सभी अध्यारोपों का अपवाद (खंडन) है। अतः आत्मा की ब्रह्मता का अनुभव संस्कारजन्य नहीं अपितु संस्कार-समष्टि के अपवाद से उपलक्षित है।

श्रुति ने कहा : 'सब परमात्मा है।' इस श्रुति को सबने सुना किंतु सबकी प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न हुई। कर्मी ने कहा : ''जब सब परमात्मा है तो सबकी सेवा करनी चाहिए।'' उपासक ने कहा : ''जब सब परमात्मा है तो राग-द्वेष किससे ? सबमें परमात्मा की भावना करनी चाहिए।'' ध्यानी ने कहा : ''जब सब परमात्मा है तो प्रातीतिक अनेकता की अप्रतीति का अभ्यास करो।'' वेदांती ने कहा : ''बाबा ! इसमें करने-धरने का क्या है, श्रुति एक सत्य का उद्‌घाटन कर रही है। सब ब्रह्म है तो मैं ब्रह्म हूँ, मुझसे भिन्न कोई दूसरा है ही नहीं।'' वह ऐसा जानकर ही कृतकृत्य हो गया। पूर्ण गुरु किरपा मिली, पूर्ण गुरु का ज्ञान...

वेलेंटाइन डे की जगह मनाया मातृ-पितृ पूजन दिवस

दबंग दुनिया, रायपुर। पूरे देश में अब तक लगभग सवा करोड़ से भी अधिक बच्चों ने सम्मिलित होकर अपने माता-पिता का पूजन किया। मुख्यमंत्री रमन सिंह ने राज्य के स्कूलों में १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाये जाने की घोषणा की थी। मातृ-पितृ पूजन दिवस के प्रणेता संत आशारामजी बापू के रायपुर आश्रम में गुरुकुल के बच्चों व हजारों साधक परिवारों ने अपने माता-पिता का पूजन-वंदन किया। इस दौरान कई राजनीतिक पार्टियों ने भी शहर में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया।

अपनी संस्कृति में लौटा शहर

हरिभूमि, रायपुर। स्कूलों सहित समाज, संगठनों ने मनाया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' नन्हे हाथों ने किया जीवन देनेवालों को नमन

प्यार की चादर ओढ़कर फूहड़ता की सारी हदें पार करने की कवायत को राजधानी (रायपुर) त्याग रही है। १४ फरवरी को वेलेंटाइन डे के नाम पर मनाये जानेवाले जिस्मानी प्यार के जश्न को रूहानी तरीके से मनाया गया।

विद्यालयों में मातृ-पितृ पूजन दिवस के खुशनुमा माहौल में नन्हे हाथों ने जीवन देनेवालों को नमन किया। **प्रो. जे.एन. पांडे स्कूल में तो इस अवसर पर शिक्षा मंत्री केदार कश्यप व जिला शिक्षा अधिकारी ए.एन. बंजारा भी मौजूद थे।** शाम ढलते-ढलते शहर ने साबित कर दिया कि अब वापस अपनी संस्कृति की ओर लौटने का वक्त आ गया है।

मॉल, गार्डन, रेस्टोरेंट - सब सामान्य

युवावर्ग को बहला-फुसलाकर सिर्फ अपनी जेबें भरने के उद्देश्य से कोई खास आयोजन मॉल्स और शहर के बड़े होटलों में नहीं किया गया। गार्डन में आमतौर पर नजर आनेवाले जोड़े इस दिन नजर नहीं आये।

पैरेंट्स के साथ सेलिब्रेट किया वेलेंटाइन डे

दैनिक भास्कर । किसी वक्त युगलों की मुलाकातों के लिए जाना जानेवाला यह फेस्टिवल इस बार पैरेंट्स डे जैसी एक्टीविटी के रूप में मनाया गया।

वेलेंटाइन डे पर अपने वरिष्ठ वकीलों को याद किया संघ ने

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' पर अधिवक्ताओं ने जिले के दिवंगत नामचीन और विख्यात अधिवक्ताओं को याद किया।

जिले के ४ लाख माता-पिता पूजे गये

राज एक्सप्रेस, छिंदवाड़ा । परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की प्रेरणा से पूरे विश्व में मनाया जानेवाला मातृ-पितृ पूजन दिवस छिंदवाड़ा जिले में भी हर्षोल्लास से मनाया गया। जिला कलेक्टर श्री महेशचन्द्र चौधरी द्वारा सभी ४०२२ सरकारी तथा ८७७ गैर-सरकारी स्कूलों में आदेश जारी किया गया एवं तदनुसार यह आयोजन सम्पन्न हुआ। गुरुकुल में इस अवसर पर देश-विदेश के पालकगण उपस्थित हुए।

माता-पिता के साथ बच्चों को बहुत आदर-सम्मान से पेश आना चाहिए

सेंट्रल क्रॉनिक, रायपुर । मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने सभी विद्यार्थियों, माता-पिताओं, शिक्षकों और दूसरे व्यक्तियों से अपील की : ''माँ-बाप की बच्चों के सर्वांगीण विकास में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति में माता-पिता का बहुत ऊँचा आदर-सम्मान का पद है। अतः उनके साथ बच्चों को बहुत आदर-सम्मान से पेश आना चाहिए।''

संघर्ष से नहीं, प्रेम से ही मिटेगा वेलेंटाइन कल्चर

दैनिक सनातन प्रभात, दैनिक भास्कर, दैनिक अमरावती मंडल, दैनिक अमरावती दर्शन से संकलित । बालकों और युवा पीढ़ी को बर्बादी के रास्ते ले जानेवाले वेलेंटाइन कल्चर को मिटाना है तो संघर्ष नहीं, प्रेम का सहारा लेना पड़ेगा। गत ८ वर्षों से परम पूज्य संत आशारामजी बापू ने वेलेंटाइन डे को मातृ-पितृ पूजन दिवस के रूप में मनाने की नयी प्रथा शुरू की हुई है।

संस्कारों से जोड़ता है मातृ-पितृ पूजन समारोह

दैनिक जागरण, गोरखपुर । बाबा राघवदास मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के.पी. कुशवाहा ने कहा कि ''मातृ-पितृ पूजन जैसे समारोह हमें अपने संस्कारों से जोड़ते हैं। वेलेंटाइन डे का भारतीय संस्कृति में कोई स्थान नहीं है। यह केवल और केवल व्यावसायिक जुमला है।''

पूरा मानव-समाज बापूजी का ऋणी रहेगा

न्यूज पोस्ट । गोरखपुर आकाशवाणी केन्द्र की कार्यक्रम अधिशासी डॉ. राज्यश्री बैनर्जी ने कहा कि ''मातृ-पितृ पूजन जैसे आयोजन भारत की गौरवशाली परम्परा की याद दिलाते हैं। वेलेंटाइन डे हमारी संस्कृति पर हमला है। इससे कई युवक-युवतियाँ बरबाद हो गये और माँ-बाप की नेक उम्मीदों का गला घोंट रहे हैं। अतः हमें वेलेंटाइन डे का पुरजोर विरोध करना चाहिए।

बापूजी ने बच्चे-बच्चियों का मंगल किया है, साथ ही उनके अभिभावकों का भी दुःख हरा और प्रभुरस भरा है। १६७ देशों में कहीं कम, कहीं ज्यादा मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया। केवल हिन्दू ही नहीं, पूरा मानव-समाज बापूजी का ऋणी रहेगा। भगवान शिवजी ने कहा :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥''

बापूजी ने ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ द्वारा सांस्कृतिक धरोहर को बचाया है

– जगद्‌गुरु श्री पंचानंद गिरिजी जूना अखाड़ा

आशारामजी बापू ने माता-पिता के पूजन का जो रास्ता निकाला, इससे उन्होंने हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर को बचाया है और इस अभियान को पूरे विश्व में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त हो रही है।

आज देश के अंदर ऐसी संस्थाओं की, ऐसे गुरुओं की, ऐसे धर्माचार्यों की बहुत जरूरत है जिनके धर्म-प्रचार से प्रेरित होकर बच्चे अपनी संस्कृति अपनायें। भारत में फैलती जा रही वेलेंटाइन डे की कुप्रथा को रोकने के प्रयास पिछले ८ वर्षों से आशारामजी बापू द्वारा किये जा रहे हैं और उसमें उन्होंने सफलता भी हासिल की। लेकिन पश्चिमी सभ्यता का प्रचार-प्रसार और धर्म-परिवर्तन करनेवाले लोगों को यह बात हजम नहीं हुई। नतीजन आज पूरा संसार जान रहा है कि बापूजी को कितनी पीड़ा इन कार्यों के लिए अपने शरीर पर लेनी पड़ रही है। फिर भी बहुत खुशी की बात है कि बापूजी के हौसले बुलंद हैं, हर पीड़ा का सामना करते हुए आज भी उस कार्य को कर रहे हैं। बापू व उनके शिष्यों को खूब-खूब धन्यवाद है। बापूजी शीघ्र बाहर आयेंगे और पहले से भी अधिक लोग उनका लाभ उठायेंगे।

माता-पिता की आराधना-पूजा से बहुत अच्छी सफलता मिलती है

– फिरोज खान, महाभारत धारावाहिक के अर्जुन

हमारी सभ्यता और संस्कृति - हिन्दुस्तान की संस्कृति है, जहाँ हम माँ-बाप को देवता मानते हैं। ‘वेलेंटाइन डे’ अंग्रेजों ने शुरू किया है तो हम लोग उस दिन ‘मातृ-पितृ पूजन दिवस’ मनायें, माता-पिता की आराधना करें, पूजा करें तो जीवन उन्नत होगा, पवित्र होगा।

यह आत्मा एक, शुद्ध, स्वयंप्रकाश, निर्गुण, गुणों का आश्रयस्थान, सर्वव्यापक, आवरणशून्य, सबका साक्षी एवं अन्य आत्मा से रहित है। अतः शरीर से भिन्न है। जो पुरुष इस देह-स्थित आत्मा को इस प्रकार शरीर से भिन्न जानता है, वह प्रकृति से संबंध रखते हुए भी उसके गुणों से लिप्त नहीं होता, क्योंकि उसकी स्थिति मुझ परमात्मा में रहती है। राजन् ! जो पुरुष किसी प्रकार की कामना न रखकर अपने वर्णाश्रम के धर्मों द्वारा नित्यप्रति श्रद्धापूर्वक मेरी आराधना करता है, उसका चित्त धीरे-धीरे शुद्ध हो जाता है। चित्त शुद्ध होने पर उसका विषयों से संबंध नहीं रहता तथा उसे तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। फिर तो वह मेरी समतारूप स्थिति को प्राप्त हो जाता है। यही परम शांति, ब्रह्म अथवा कैवल्य है। जो पुरुष यह जानता है कि शरीर, ज्ञान, क्रिया और मन का साक्षी होने पर भी कूटस्थ आत्मा इनसे निर्लिप्त ही रहता है, वह कल्याणमय मोक्षपद प्राप्त कर लेता है।”

विश्वभर में छाया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस अभियान 'बीबीसी वर्ल्ड' भी हुआ आकर्षित

www.bbc.co.uk/news/magazine-26187572

Home | World | Asia | India | China | UK | Business | Health | Science/Environment

Magazine | In Pictures | Also in the News | Editors' Blog | Have Your Say | World N

BBC

IN INDIA
THE HASHTAG
#PARENTSWORSHIPDAYON14FEB
HAS BEEN TRENDING

#BBCtrending: Valentine's to blame for teen pregnancy?

1 hour ago

Rather than celebrating romance on Valentine's Day, should we instead blame it for driving up teenage pregnancy rates and creating more single parent households?

Valentine's Day is celebrated in many countries across the world. But in India, the hashtags **#HappyParentsWorshipDay** and **#ParentsWorshipDayOn14Feb** are trending - part of an organised campaign to ditch the idea of romance between boys and girls in the country, and replace it instead with a celebration of the love between parents and children.

१४ फरवरी के दिन इंटरनेट (ट्विटर) पर जोर-शोर से चल रहे मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाओ अभियान ने इंग्लैंड के 'बीबीसी वर्ल्ड' नामक प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय न्यूज चैनल का ध्यान आकर्षित कर लिया। ट्विटर पर १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने के समर्थन में १ लाख ६० हजार से भी अधिक ट्वीट्स (#ParentsWorshipDayOn14Feb संदेश) से प्रभावित होकर बीबीसी ने अपनी वेबसाइट 'बीबीसी ट्रेंडिंग' पर इस अभियान से संबंधित एक विडियो दिखाया है। उसमें एक ओर जहाँ वेलेंटाइन डे के कारण हो रहे किशोरी-गर्भावस्था जैसे भयंकर दुष्परिणामों को उजागर किया गया है, वहीं दूसरी ओर मातृ-पितृ पूजन दिवस के भावनात्मक प्रसंगों को उजागर करके पूरे विश्व के सामने यह सवाल रखा गया है कि 'क्या वेलेंटाइन डे की जगह मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जाय ?' साथ ही बीबीसी ने स्वयं ही #LoveYourParentsDay नाम से विश्वभर में एक नया ट्रेंड (चर्चा का विषय) भी चलाया।

भारत में चल रही इस मुहिम को समझाते हुए बीबीसी ने कहा कि ''यह विषय जताता है कि वेलेंटाइन डे माता-पिता को प्रेम करने के दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए न कि (युवक-युवतियों के बीच) प्रेम-संबंध (रोमांस) बनाने के लिए। वेलेंटाइन डे पश्चिमी सभ्यता है और वे इसे मनाने के खिलाफ हैं।''

'बीबीसी वर्ल्ड' ने प्रस्तुत विडियो में मातृ-पितृ पूजन दिवस की झलकियों के साथ श्री नारायण साँईं को पूज्य बापूजी का पूजन करते हुए भी दिखाया। षड्यंत्रकारियों के झूठे, मनगढ़ंत, अनर्गल दुष्प्रचार के बावजूद मातृ-पितृ पूजन दिवस को विश्वव्यापी बनाने का पूज्य बापूजी का संकल्प साकार हुआ है।

गुरुभक्ति-योग

– स्वामी श्री शिवानंदजी सरस्वती

शिष्यवृत्ति के सिद्धांत

- **शिष्य को ईश्वररूप में गुरु की सेवा करनी चाहिए। विश्व के नाथ को प्रसन्न करने एवं उनकी कृपा के योग्य बनने का यह सुनिश्चित उपाय है।**
- **शिष्य को वैराग्य का अभ्यास करना चाहिए और अपने आध्यात्मिक गुरु का सत्संग करना चाहिए।**
- **शिष्य को प्रथम तो अपने गुरु की कृपा प्राप्त करनी चाहिए और उनके बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिए।**
- **शिष्य को अपनी इन्द्रियों को संयम में रखकर गुरु के आश्रय में रहना चाहिए तथा सेवा, साधना एवं शास्त्राभ्यास करना चाहिए।**
- **शिष्य को गुरु के द्वार से जो कुछ कम या ज्यादा, सादा या स्वादु खाना मिले, वह गुरुभाइयों को अनुकूल होकर खाना चाहिए।**

गुरु का ध्यान

- **गुरु के चरणकमलों का ध्यान करना, यह मोक्ष एवं शाश्वत सुख की प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है।**
- **जो मनुष्य गुरु के चरणकमलों का ध्यान नहीं करते, वे आत्मा का घात करनेवाले हैं। वे सचमुच जिंदे शव के समान कंगले मवाली हैं। वे अति दरिद्र लोग हैं। ऐसे निगुरे लोग बाहर से धनवान दिखते हुए भी आध्यात्मिक जगत में अत्यंत दरिद्र हैं।**
- **सयाने सज्जन अपने गुरु के चरणकमल के निरंतर ध्यानरूपी रसपान से अपने जीवन को रसमय बनाते हैं और गुरुज्ञानरूपी तलवार को साथ में रखकर मोह-माया के बंधनों को काट डालते हैं।**

मातृ-पितृ पूजन दिवस संदेश

भारत एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक भावनाओं से परिपूर्ण तथा नैतिक मूल्यों एवं संस्कारों वाला देश है।

माता-पिता को देवतुल्य स्थान देकर उनके प्रति अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति भारतभूमि की परम्परा रही है । परिवार में 'माता-पिता' सदैव वात्सल्य और स्नेह की प्रथम प्रतिमूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं।

हमारा यह धान का कटोरा 'छत्तीसगढ़' सदैव ऐसे नैतिक मूल्यों के निर्वहन में अग्रणी रहा है । पिता की इच्छाओं को अपना जीवन-ध्येय माननेवाले मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्रजी को अपने गर्भ में धारण करनेवाली माता देवी कौसल्या की यह जन्मस्थली भी है।

हमारी गौरवशाली परम्पराओं तथा संस्कार एवं संस्कृति के समन्वय का मूलमंत्र माता-पिता के आशीर्वाद में निहित है, जिसका सम्मान करते हुए हम विगत वर्ष से १४ फरवरी 'विश्व प्रेम दिवस' को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनाते आ रहे हैं।

इस वर्ष भी हमने अपने संस्कारों की इसी महान परम्परा को निरंतर रखने का निर्णय लिया है । अतः १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' सभी विद्यालयों में समारोहपूर्वक आयोजित करने की अपेक्षा के साथ...

– केदार कश्यप
मंत्री, स्कूल शिक्षा विभाग,
आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति,
पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण,
छत्तीसगढ़ शासन

दगा दे सकता है भरोसा ! सावधान रहें !

(संदर्भ : दैनिक नवज्योति, जोधपुर, १४ फरवरी)

तमाम तरह की हिदायतों व सीख के बावजूद शहर के कई युवा 'वेलेंटाइन डे' के बहाने संस्कृति का चीरहरण करने के लिए तैयार हैं और दाँव पर रखा है अपनों का भरोसा !

१४ फरवरी को युवाओं के मन को टटोला गया तो वे उत्साहित दिखे परंतु सबने माना कि उनके अभिभावक नहीं चाहते कि वे इस दिन को मनायें । अब कश्मकश यही है कि अपने अभिभावकों की आँखों में धूल झोंककर वे कैसे इस दिन को मनायेंगे ? इसके लिए कोई कुछ तो कोई कुछ बहाना सोच रखते हैं । कई तो सीधे तौर पर माँ-बाप के भरोसे को ही हथियार बनाते हैं।

समय विकट है और अधिकांश युवाओं की सोच भी अजीबोगरीब ! १४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' के बहाने जो भी मिलने की जल्दबाजी मचाते हैं, उनमें से कइयों के मन में चोर ही होगा। तय है इस रूप में अधिकांश अभिभावकों का अपने बच्चों के प्रति भरोसा दगा दे जायेगा।

युवाओं से हमारी अपील है कि वे केवल प्यार-प्रदर्शन के बहाने उस भरोसे को न तोड़ें जो अभिभावकों ने उनके प्रति बनाया हुआ है। हर पल सचेत रहने का समय है। जरा-सी चूक न केवल आपको, बल्कि आपको जी-जान से चाहनेवालों को भी जिंदगीभर का जख्म दे सकती है, यह न भूलें । चूँकि इस दिन के विरोध में जब बड़े-बुजुर्ग हैं तो वे गलत नहीं हो सकते। यह विश्वास बच्चे भी रखें तो ही बेहतर। 'प्रेम दिवस' को संस्कारित रूप से ही मनायें ताकि सबको आप पर गर्व हो सके।

उत्तम संतानप्राप्ति के योग ने दिलायी उत्तम संतान

मैंने और मेरी पत्नी ने पूज्य बापूजी से २००४ में मंत्रदीक्षा ली थी। २००८ में 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका में उत्तम संतानप्राप्ति का योग छपा था। उसमें बताये गये नियमों का हमने पालन किया और गुरुदेव से उत्तम संतानप्राप्ति हेतु प्रार्थना की। मई २००९ में बापूजी की कृपा से हमारे घर एक बच्चे का जन्म हुआ, हमने उसका नाम 'ॐ' रखा। हमें इस बात का बहुत आश्चर्य था कि ४ साल का होने तक वह दूध के अलावा कुछ भी नहीं खाता था। एक बार हम बच्चे को ले के पूज्य बापूजी के दर्शन करने गये तो उसे देखते ही बापूजी बोले : ''यह पूर्व जन्म में योगी था।'' और बापूजी के दर्शन के बाद से ही उसने खाना शुरू किया।

'ॐ' बचपन से ही बड़ा होनहार है। कोई भी बात एक बार बताने से उसे याद रह जाती है। स्वभाव भी एकांतप्रिय और शांत है। उसके शिक्षक बोलते हैं : ''हम अपनी कक्षा के चंचल स्वभाववाले बच्चों को एक सप्ताह तक 'ॐ' की बगल में बैठाते हैं तो उन बच्चों का भी स्वभाव बदल जाता है।''

इस अनुभव से मुझे पक्का भरोसा हो गया है कि यदि शास्त्रों की बातों और संतों के वचनों का आदर करें, उन पर अमल करें तो जीवनभर संतानों के कारण होनेवाले दुःख और परेशानी से तो माता-पिता बच ही जायेंगे साथ ही जीवन की हर परेशानी का समाधान भी मिल जाता है, जिसे पाकर सुखी जीवन जीया जा सकता है।

सब चाहते हैं कि हमारी संतानें आज्ञाकारी हों, नेक राह पर चलें, महान बनें। इसलिए सभीसे अनुरोध है कि विश्वमानव का भला चाहनेवाले पूज्य बापूजी द्वारा बताये मार्ग पर चलकर आप भी सुख-शांतिमय, प्रभुमय जीवन का आनंद लें और जीवनदाता के ज्ञान को पाने में सफल हो जायें।

उत्तम संतान की इच्छा रखनेवाले 'ऋषि प्रसाद' वर्तमान अंक में (पृष्ठ १७ पर) दिये गये इससे संबंधित योग का यथोचित पालन करें और लाभान्वित हों। इहलोक व परलोक की सँभाल रखनेवाले पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में मेरे कोटि-कोटि प्रणाम ! - शीतल त्यागी, गाजियाबाद (उ.प्र.), मो. : ९३५०५०९८३१

***

की सेवा, मिला मेवा

मैं कुछ समय से आर्थिक रूप से बहुत परेशान था। कर्जा हो गया था और वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा था। ऐसी दशा में एक बार मैं भोपाल आश्रम गया। वहाँ एक गुरुभाई ने 'ऋषि प्रसाद' की सेवा करनेवाले एक भाई का अनुभव मुझे बताया और कहा कि ''सत्संग-ज्ञान के प्रचार की ऐसी सेवा से दूसरों का जीवन उन्नत होने लगता है और दूसरों का दुःख, शोक, परेशानियाँ जो मिटाता है उसका अपना दुःख और परेशानियाँ टिकती नहीं।'' मुझे यह बात जँच गयी और मैंने बड़ बादशाह की परिक्रमा करके संकल्प किया कि 'मैं प्रतिदिन यह सेवा करूँगा।' उसी दिन से मैंने 'ऋषि प्रसाद' की सेवा शुरू कर दी।

कुछ ही दिनों में गुरुकृपा से हमारी सारी परेशानियाँ दूर होने लगीं। आज मैं पूरी तरह कर्जे से मुक्त हूँ। आर्थिक, मानसिक व पारिवारिक परेशानियाँ भी दूर हो गयीं। यह सब 'ऋषि प्रसाद' की सेवा का मेवा है। सद्गुरुदेव की कृपा से मेरे सभी कार्य अपने-आप ही सुचारु रूप से चलने लगे हैं।

ऐसे अनेकों सेवाकार्यों के प्रेरणास्रोत पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन !

- संतोष जाटव, भोपाल, मो. : ९०९८७५८६९९

सफेद शक्कर का काला अंतरंग

(गतांक का शेष)

शक्कर की जगह क्या खायें ?

प्राकृतिक शर्करा परिष्कृत शक्कर का श्रेष्ठ विकल्प है । शरीर को जितनी चाहिए उतनी शर्करा दूध, फल, कंदमूल, अनाज व सब्जियों में सहजता से मिल जाती है। डॉ. डायमंड के अनुसार प्राकृतिक शर्करा से जीवनशक्ति का विकास होता है और परिष्कृत शर्करा से उसका ह्रास होता है।

* दूध में निहित 'लेक्टोस' व फलों में निहित 'फ्रुक्टोज' शर्करा शीघ्र ऊर्जा व स्फूर्ति देती है।

* खजूर में अत्यधिक प्राकृतिक शर्करा पायी जाती है। दूध में चीनी मिलाने की अपेक्षा २-३ भिगोये हुए खजूर पीसकर मिलाना शरीर के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

* किशमिश की शर्करा सुपाच्य एवं तुरंत स्फूर्ति-शक्ति व ताजगी देनेवाली है।

* शहद में ८०% ग्लूकोज व फ्रुक्टोज पाया जाता है जो खाने के बाद शीघ्र ही रक्तप्रवाह में आकर शरीर को शक्ति व सामर्थ्य देता है।

* गन्ने से भारतीय परम्परा से (रसायनरहित) बनाया गया गुड़ भी शक्कर का उत्तम पर्याय है। न्यूयॉर्क स्थित 'नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन्स' के अनुसार 'गुड़ में शरीर के लिए आवश्यक महत्त्वपूर्ण खनिज जैसे कि कैल्शियम, फॉस्फोरस, लौह आदि तथा विटामिन बी-कॉम्प्लेक्स के अंश - थाइमीन, राइबोफ्लेविन और नायसिन पाये जाते हैं।' आयुर्वेद के अनुसार नये की अपेक्षा पुराना गुड़ हितकर है। मीठे व्यंजन बनाने में शक्कर के स्थान पर गुड़ का उपयोग करें।

सुदूर वन्य एवं पर्वतीय क्षेत्रों में रहनेवाले आदिवासियों के आहार में जहाँ शक्कर का कोई स्थान नहीं है, वे स्वास्थ्य की दृष्टि से आज भी हमसे अधिक हृष्ट-पुष्ट व स्वस्थ हैं।

***

गले व छाती के रोगों में क्या करें ?

(१) गले में दर्द, खाँसी, कफ, संक्रमण (इन्फेक्शन) आदि में आधा (शेष पृष्ठ ३७)

और भी व्यापक स्तर पर मनाया गया मातृ-पितृ पूजन दिवस

दुबई में भी महकी मातृ-पितृ पूजन की महक

विदेशों में भी महकी मातृ-पितृ पूजन की महक

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू की पावन प्रेरणा से पिछले ८ वर्षों से वैश्विक स्तर पर मनाया जा रहा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' इस वर्ष और भी व्यापक स्तर पर मनाया गया। इस वर्ष भले ही पूज्य बापूजी को षड्यंत्र में फँसाकर विश्वमानव के परम हितकारी ऐसे अभियानों एवं सेवाकार्यों में रुकावट डालने का दुष्प्रयत्न किया गया लेकिन इसके बावजूद भी इस वर्ष इस विश्वव्यापी अभियान में विभिन्न धर्माचार्यों के अलावा अनेक सामाजिक संगठन एवं कई सुप्रसिद्ध हस्तियाँ जुड़ गयी हैं।

आश्रम, समितियाँ, बाल संस्कार केन्द्र, युवा सेवा संघ, महिला उत्थान मंडल तथा असंख्य साधक एक महीना पहले से ही इस अभियान में लग गये थे। देशभर में अनेक स्थानों पर जनजागृति-यात्राएँ निकाली गयीं। विद्यालयों में 'माँ-बाप को भूलना नहीं' रंगीन पुस्तिका बाँटकर बच्चों को माता-पिता का पूजन करने की प्रेरणा दी गयी। विभिन्न स्थानों पर वेलेंटाइन डे के दुष्प्रभाव तथा मातृ-पितृ भक्ति के सद्भाव को दर्शाती लघु नाटिकाओं के माध्यम से **मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव।** का सुंदर संदेश समाज को दिया गया। माता-पिता और संतानों के सच्चे प्रेम पर बनी विशेष फिल्म 'माँ-बाप को मत भूलना' ने तो कमाल ही कर दिया! जिसने भी देखा, गद्गद हो गया, भाव-विह्वल होकर रो पड़ा। मुंबई शहर में जगह-जगह लगे 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के होर्डिंग्ज के कारण वहाँ के स्थानीय लोगों में यह पर्व चर्चा का विषय बना रहा। इतना ही नहीं, देश के आदिवासी इलाके जैसे - सरजामदा व जसकंडी गाँव (झारखंड) आदि में भी यह पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। औरंगाबाद (महा.) में महिला उत्थान मंडल द्वारा 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के साथ गरीबों में कम्बलों का वितरण भी किया गया।

पारिवारिक स्तर पर करोड़ों लोगों द्वारा मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया। साथ ही इस दिन देश-विदेश के १७,००० से अधिक बाल संस्कार केन्द्रों, १४०० समितियों, देशभर के युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों तथा सभी आश्रमों व गुरुकुलों में सामूहिक रूप से मातृ-पितृ पूजन दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

१४ फरवरी को रामलीला मैदान, दिल्ली में सामूहिक मातृ-पितृ पूजन का विशाल कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में केवल बच्चों तथा माँ-बाप की आँखों से ही प्यार के आँसू नहीं बरसे बल्कि ऐसा

पवित्र और शुद्ध प्रेम देखकर इन्द्र देवता भी खूब बरसे। लेकिन जिन साधकों ने बापूजी से ठंडी-गर्मी, मान-अपमान में सम रहने की कला सीखी है, उन्हें भला बरसात से क्या फर्क पड़ता ! बरसात होने के बावजूद भी कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

भारत के अलावा विदेशों में भी मातृ-पितृ पूजन दिवस सामूहिक रूप से मनाया गया। अमेरिका में मैरीलैंड, बोस्टन, कैलिफोर्निया, न्यूजर्सी तथा शारजाह (दुबई), लंदन (यूके), नेपाल सहित दुनिया के १६७ देशों में यह सच्चे प्रेम की गंगा बही।

इस बार लाखों लोगों ने ट्विटर पर 'वेलेंटाइन डे' का नकारकर #HappyParentsWorshipDay को ट्विट करके मातृ-पितृ पूजन दिवस

मनाने पर अपनी सहमति जतायी। १४ फरवरी को भारत में यह ट्रेंड प्रथम स्थान पर देखा गया।

छत्तीसगढ़ के सभी विद्यालयों में मनाया गया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

देशभर के विभिन्न विद्यालयों तथा सामूहिक स्थानों पर १४ फरवरी के पहले से ही सामूहिक 'मातृ-पितृ पूजन' कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हो गया था। छत्तीसगढ़ शासन के आदेश पर पिछले २ वर्षों की

तरह इस वर्ष भी समस्त राज्य के विद्यालयों में १४ फरवरी को यह पर्व मनाया गया। छिंदवाड़ा जिलाधीश के आदेश से पूरे जिले में १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया। अखबारों की रिपोर्ट के अनुसार यहाँ ४ लाख से अधिक माता-पिताओं की पूजा की गयी।

देशभर के संत श्री आशारामजी गुरुकुलों में १४ फरवरी को सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम बड़े ही रंगारंग ढंग से सम्पन्न हुए। इसमें बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से माता-पिता के पूजन का पावन संदेश दिया। अहमदाबाद गुरुकुल के विद्यार्थियों ने संस्कृति-रक्षक संतों का आदर्श प्रस्तुत करते हुए एक मनोहर नाटिका के माध्यम से संत-सम्मेलन का आयोजन किया।

महिला उत्थान मंडल द्वारा वृद्धाश्रमों में भी मनाया गया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

माँ-बाप जो हमें जीवन-दान देते हैं, खुद कष्ट सहकर भी हमारी आवश्यकताएँ पूरी करने में अपना जीवन लगा देते हैं, ऐसे माँ-बाप का ऋण भला कैसे

चुकाया जा सकता है ? परंतु पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति, कुत्सित विचारधारा तथा वेलेंटाइन डे जैसी कुरीतियों के कारण अपने देवतुल्य माता-पिता के सारे उपकारों को भुलाकर अनेक युवक अपने वृद्ध माँ-बाप को वृद्धाश्रम में छोड़ने लगे हैं।

अपने बच्चों से ठुकराये गये इन वृद्धों के बीच जब महिला उत्थान मंडल की साधिकाएँ पहुँचीं तो उनके मुरझाये हुए चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ गयी। इन

साधिकाओं ने बड़े ही प्रेम से वृद्धों की पूजा की, उनका सम्मान किया तो उनकी आँखों में प्रेमाश्रु छलक पड़े।

जलगाँव, वर्धा (महा.), दुर्ग, भिलाई (छ.ग.), जालंधर (पंजाब) आदि अनेक स्थानों के वृद्धाश्रमों में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जालंधर के वृद्धाश्रम में हुए कार्यक्रम में लुधियाना, शिमलापुरी के काउंसिलर सरदार जरनेल सिंह भी सहभागी हुए। उन्होंने मातृ-पितृ पूजन दिवस की प्रशंसा करते हुए पूज्य बापूजी के खिलाफ हो रहे षड्यंत्र की निंदा की।

मातृ-पितृ पूजन दिवस पर देशभर में हुए संत-सम्मेलन

भारत को विश्वगुरु बनाने में अहम भूमिका निभा रहे इस सुंदर पर्व को सभी धर्मों के आचार्यों ने न केवल

सराहा है बल्कि अपने प्रवचन-कार्यक्रमों में भी सामूहिक मातृ-पितृ पूजन का आयोजन करवा के समाज को सही दिशा दिखायी है।

१४ फरवरी को गोरेगाँव, मुंबई में विशाल संत-सम्मेलन हुआ। इसमें जाने-माने संतों की उपस्थिति में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया गया। भभुआ जि. कैमूर (बिहार) में भी संत-सम्मेलन व सामूहिक मातृ-पितृ पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रायपुर (छ.ग.) में एक सत्संग-कार्यक्रम में संत बालकदासजी महाराज ने सामूहिक मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम में सम्मिलित होकर स्वयं अपने माता-पिता की पूजा करके सभीके सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्षा एवं लोकसभा सांसद सुश्री सरोज पांडेय भी सम्मिलित हुईं। शिवधारा आश्रम, अमरावती के संत डॉ. संतोष नवलानीजी ने भी अपने माता-पिता का पूजन करके मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने का आह्वान किया।

देशभर में हुए श्री आशारामायण पाठ

अहमदाबाद आश्रम के स्थापना दिवस 'मौनी अमावस्या' पर (३० जनवरी को) अहमदाबाद आश्रम में श्री आशारामायण के सामूहिक पाठ हुए। इसके अलावा अन्य आश्रमों एवं देश में कई स्थानों पर श्री आशारामायण पाठ, हवन, भजन, कीर्तन, प्रार्थना आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

देशभर में हो रहे हैं विशाल हवन-यज्ञ

पूज्य बापूजी की स्वास्थ्य-सुरक्षा व शीघ्र दर्शन-सत्संग प्राप्ति हेतु नियमित रूप से चल रहे हवन-यज्ञादि कार्यक्रमों के अलावा कई स्थानों पर विशाल

सामूहिक महायज्ञ भी हो रहे हैं। अहमदाबाद आश्रम में ५ जनवरी से १६ फरवरी तक हर रविवार को १०८ कुंडी महायज्ञ हुआ। ५ जनवरी को दुर्गाजी के 'द्वात्रिंशन्नाम' (बत्तीस नामों) से सवा लाख होम, १२ जनवरी को दुर्गा याग, १९ जनवरी को महाविष्णु याग, २६ जनवरी को मृत्युंजय यज्ञ, २ फरवरी को गणेश यज्ञ, ९ फरवरी को राम यज्ञ व १६ फरवरी को नवग्रह यज्ञ हुआ। ३ फरवरी को नागपुर (महा.) में भी १०८ कुंडी महायज्ञ हुआ। बड़ौदा (गुज.) में २६ जनवरी एवं १४ फरवरी को २१ कुंडी यज्ञ हुआ। भिलाई तथा बेलौदी जि. दुर्ग (छ.ग.), भावनगर, राजकोट (गुज.), भुवनेश्वर (ओड़िशा), चित्तौड़गढ़ (राज.), बरेली, लखनऊ (उ.प्र.), बोईसर जि. ठाणे, उल्हासनगर (महा.), करोलबाग आश्रम - दिल्ली आदि स्थानों पर भी विशाल यज्ञ सम्पन्न हुए

। जबलपुर आश्रम में रुद्र अभिषेक किया गया। जलगाँव (महा.) में संकीर्तन यात्रा निकाली गयी। जम्मू में सत्संग प्रचार सेवा मंडल तथा बेलौदी (छ.ग.) में महिला उत्थान मंडल द्वारा सुप्रचार अभियान के तहत गाँव-गाँव में जाकर प्रोजेक्टर द्वारा विडियो सत्संग दिखा के लोगों को लाभान्वित किया जा रहा है।

पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए संत-समाज ने दिया राष्ट्रपतिजी को ज्ञापन

बापूजी ने हमेशा से भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म की रक्षा के लिए अपनी आवाज बुलंद की है और समाज

को विदेशी षड्यंत्रों से बचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। बापूजी निर्दोष हैं और उनके द्वारा हो रहे इस महत्कार्य को रोकने हेतु बड़ी साजिश के तहत उन्हें फँसाया गया है, इस बात को संत-समाज भलीभाँति जानता है । इसलिए संत-समाज, अनेक हिन्दू संगठन एवं विभिन्न क्षेत्रों की सुप्रतिष्ठित हस्तियाँ - सभी एकजुट होकर विशाल सम्मेलनों, रैलियों, धरना-प्रदर्शनों आदि के माध्यम से पूज्य बापूजी की रिहाई की माँग कर रहे हैं। ४ फरवरी को जंतर-मंतर पर श्री चक्रपाणि महाराज, श्री मुकेश खन्ना, सेनाचार्य स्वामी श्री नरेशानंदजी महाराज आदि कई संतों एवं प्रतिष्ठितों की उपस्थिति में संत-सम्मेलन हुआ तथा बाद में राष्ट्रपतिजी को ज्ञापन सौंपा गया। गेवराई जि. बीड (महा.) तथा कातरो जि. दुर्ग (छ.ग.) में भी संत-सम्मेलन का आयोजन हुआ। पूज्य बापूजी व उनके परिवार को साजिश के तहत फँसाये जाने का विरोध करते हुए आलंदी जि. पुणे (महा.), बुराडी-दिल्ली, रोहिणी-दिल्ली आदि स्थानों पर लोगों ने धरना दिया। मीडिया द्वारा उनके बारे में किये जा रहे अनर्गल दुष्प्रचार एवं हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों के बीच अपनाये जा रहे पक्षपातपूर्ण, दोगले रवैये की घोर निंदा करते हुए उस पर रोक लगाने की माँग की।

(पृष्ठ ३३ शक्कर...का शेष) चम्मच पिसी हल्दी मुँह में रखकर मुँह बंद कर लें। लार के साथ हल्दी अंदर जाने से उपरोक्त सभी बीमारियों में आराम मिलता है। बच्चों की टॉन्सिल्स की समस्या में ऑपरेशन न करा के इस प्रयोग से लाभ लें। (बच्चों के लिए हल्दी की मात्रा - पाव चम्मच)

(२) छाती की गम्भीर बीमारियाँ जैसे - दमा, पुरानी खाँसी, न्यूमोनिया आदि में सुबह आधा कप ताजा गोमूत्र कपड़े से ७ बार छानकर पीना लाभदायक है। गोमूत्र नहीं मिले तो आश्रम की गौशाला में बना हुआ १०-१५ ग्राम गोझरण अर्क और उतना ही पानी मिलाकर लेना भी लाभदायी है। ५-६ महीने तक लगातार गोमूत्र पीने से क्षयरोग (टी.बी.) में भी आराम मिलता है।

(३) दमे में प्रतिदिन खाली पेट १-२ ग्राम दालचीनी का चूर्ण गुड़ या शहद मिलाकर गरम पानी के साथ लेना हितकारी है।

खाँसी में तुरंत लाभ हेतु

(१) कच्ची हल्दी का रस पियें। (मात्रा : बच्चों के लिए पाव से आधा तथा बड़ों के लिए १ चम्मच)

(२) अदरक का छोटा-सा टुकड़ा चूसें।

(३) २-३ काली मिर्च चूसें अथवा काली मिर्च चबाकर गुनगुना पानी पियें।

(४) अत्यधिक खाँसी में एक-एक चम्मच अदरक व नागरबेल (पान के पत्ते) के गुनगुने रस में थोड़ा-सा पुराना गुड़ या शहद मिलाकर पीना उत्तम है।

(मुखपृष्ठ २ से 'आरोग्यता, समता व आत्मज्ञान से ओत-प्रोत पर्व : होली' का शेष)

पूनम, अमावस्या एवं होली आदि पर्वों के दिन भूलकर भी संसार-व्यवहार नहीं करना चाहिए । इससे विकलांग संतान पैदा हो सकती है । गर्भाधान न भी हो तो भी गहरी बीमारी पकड़ सकती है । वह व्यक्ति जीवनभर कमजोरी का शिकार हो जाता है (इसका वैज्ञानिक और शास्त्रीय विश्लेषण पूर्व अंकों में किया गया है) । अतः पूनम, अमावस्या, चतुर्दशी, अष्टमी, एकादशी आदि तिथियों एवं होली, जन्माष्टमी, दिवाली आदि पर्वों तथा ऋतुकाल की तीन रात्रियों, ग्रहण व श्राद्ध के दिनों में व प्रदोष काल में भूलकर भी काम-विकार में नहीं गिरना चाहिए, नर-नारी का सहवास नहीं करना चाहिए; वरना बड़ा खामियाजा भुगतना पड़ता है । इन दिनों में देव-दर्शन, संत-दर्शन, ध्यान-भजन, सत्कर्म व साधना बड़े हितकारी होते हैं ।

प्राकृतिक-वैदिक होलिकोत्सव एवं ऋषि-विज्ञान बहुत हितकारी है लेकिन दुःख के साथ कहना पड़ता है कि इस पवित्र उत्सव में नशा, वीभत्स गालियाँ और केमिकल रंगों का प्रयोग करके कुछ लोगों ने ऋषियों की हितभावना - समाज के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और प्राकृतिक उन्नति की भावनाओं का लाभ लेने से समाज को वंचित कर दिया । भाँग पीना, शराब पीना, कीचड़ उछालना, केमिकल के खतरनाक रंग एक-दूसरे के मुँह पर या कपड़ों पर लगाकर एक-दूसरे को चर्मरोग का शिकार बनाना - ऐसा नहीं, कुदरती पुष्पों के रंग, पलाश के फूलों के रंग से होली खेलें । यह रंग अगर लगता है तो त्वचासंबंधी बीमारियों से बचाव होता है ।

हमारे लिए उचित है कि ऐसे अवसर पर हम प्रभु-गीत गायें, रस्साखींच या लाठीखेंच जैसे खेल खेलें और प्राकृतिक पुष्पों का सात्त्विक रंग लगायें - ये हमारे तन को तो तंदुरुस्त रखेंगे, साथ में मन को भी प्रसन्नता देंगे और बुद्धि को भी बुद्धिदाता के विषय में विचारने की क्षमता देंगे ।

होली से स्वास्थ्य-लाभ

पलाश के फूलों का रंग रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाता है । गर्मी को पचाने की, सप्तरंगों व सप्तधातुओं को संतुलित करने की क्षमता पलाश में है । पित्त और वायु मिलकर हृदयाघात (हार्ट-अटैक) का कारण बनते हैं । लेकिन जिस पर पलाश के फूलों का रंग छिड़क देते हैं उसका पित्त शांत हो जाता है तो हृदयाघात कहाँ से आयेगा ? वायुसंबंधी ८० प्रकार की बीमारियों को भगाने की शक्ति इस पलाश के रंग में है । पलाश के फूलों से जो होली खेली जाती है, उसमें अन्य रासायनिक रंगों की अपेक्षा पानी की बचत भी होती है ।

इस मौसम में सुबह-सुबह २० से २५ नीम के कोमल पत्ते और एक काली मिर्च चबा के खानेवाला व्यक्ति वर्षभर निरोग रहने का प्रमाणपत्र अर्थात् रोगप्रतिकारक बल एकत्र कर लेता है । होली के बाद २०-२५ दिन तक बिना नमक अथवा कम नमकवाला भोजन करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा है । इन दिनों में सर्दियोंवाला (पचने में भारी) भोजन करना हानिकारक है ।

अहंकार भूलाने का प्रेरक : होली पर्व

इस होली रंगोत्सव ने असंख्य टूटे दिलों को जोड़ा है, अशांतों को शांति बख्शी है, अहंकारियों को अहंकार भुलाकर सहज नैसर्गिक जीवन जीने की प्रेरणा दी । लोगों में जो हीनभावना थी कि 'ये बड़े सेठ, बड़े साहब हैं, बड़े आदमी हैं, हम छोटे हैं...', उसे इसने मिटा दिया । यह होली रंगोत्सव सिकुड़न भी मिटा देता है और अहंकार भी मिटा देता है । इनकम टैक्स कमिश्नर जाता हो और चपरासी का नन्हा-मुन्ना बेटा उसे पिचकारी मारे तो इस दिन कुछ नहीं होता । कोई अपने अकड़-पकड़ के स्वभाव के अनुसार सजी-धजी वेशभूषा में जा रहा है और किसीने मार दी रंग की पिचकारी तो स्वभाव के अनुसार उसने अकड़ दिखायी लेकिन जैसे ही उसे कह देते हैं : 'साहब ! होली है...' तो उस साहब का जो नाराज चेहरा था वह होली का रंग देखकर और होली की

बात सुन के मुस्करा देता है और वह हँसी में अपने-आपको बहने देता है।

आध्यात्मिक चेतना जगाने का पर्व

यह होलिकोत्सव आदमी को आध्यात्मिक चेतना जगाने की भी प्रेरणा देता है। इस दिन बच्चे चौराहे पर रुपये का सिक्का चिपकाकर छुप जाते। कोई जाता हुआ पथिक सड़क पर रुपया देखकर उठाने की कोशिश करता है लेकिन वह चिपका हुआ रुपया नहीं उठता तो सब बच्चे 'होय-होय-होय...' करके हँसते हैं। पथिक अपना उतरा मुँह लेकर चल पड़ता है लेकिन फिर बच्चे कहते कि 'भैया ! आज होली है, आप फिक्र नहीं करो' तो वह खुद हँसने लगता।

इस खेल से यह पता चलता है कि संसार भी ऐसा ही है। यहाँ मनुष्यरूपी पथिक आते हैं, कोई यह सँभालता है, कोई वह सँभालता है लेकिन लेकर नहीं जा पाते हैं, ये संसार की चीजें यहीं चिपकी रहती हैं। यह संसार भी यहीं रहेगा - इस प्रकार की खबर देकर आसक्त को अनासक्ति की प्रेरणा देने में भी इस होली उत्सव ने कमी नहीं रखी। यह होली का उत्सव खुशहाली उभारनेवाला, खुशहाली बढ़ानेवाला और परम खुशहाली की खबर दिलानेवाला उत्सव है।

होली की रात्रि चार पुण्यप्रद महारात्रियों में आती है। होली की रात्रि का जागरण और जप बहुत ही फलदायी होता है। इसलिए इस रात्रि में जागरण और जप कर सभी पुण्यलाभ लें। यह उत्सव प्राकृतिक रंगों द्वारा स्वास्थ्य-सुरक्षा, आनंद-उल्लास के साथ ज्ञान, ध्यान, जागरण, जप के द्वारा आंतर चेतना जगानेवाला तथा अंतर आराम और अंतरात्मा की प्रीति देनेवाला पर्व है।

बीती बातों को भूलने का पर्व

लोग एकत्र होकर जब होली का उत्सव मनाते हैं तो एक-दूसरे से मनमुटाव की जो बातें हैं, वे दूर हो जाती हैं। कह देते हैं कि 'भाई ! जो हो गया, सो गया।'

होली के पहले, सालभर में किसीका बेटा मरा है, किसीका बाप या पति मरा है, किसीकी पत्नी मरी है तो ऐसे शोकातुर मन भी शोक भूलकर नया जीवन जीने के लिए लालायित हो जाते हैं और उनका जीवन सफल हो जाता है क्योंकि एक तो पूनम का दिन, दूसरा वसंत ऋतु और तीसरा होली के रंग। 'हो... ली...' जो हो गया, सो हो गया, भूल जाओ। इस तरह तनाव, मानसिक अवसाद, लघुता ग्रंथि आदि से बचा के यह पर्व लोगों की मानसिक रोगों से एवं उनसे होनेवाले शारीरिक रोगों से रक्षा करता है। यह इसका मनोवैज्ञानिक रहस्य है।

होली पर्व का तात्त्विक संदेश

व्यर्थ का चिंतन मिटाने के लिए भगवद्चिंतन और फिर भगवद्चिंतन भी शांत होकर निश्चिंत नारायण का आनंद उभरे तो समझ लो गुरु के साथ होली मनाने की कला आ गयी। मीराबाई ने कहा :

श्याम पिया ! मोरी रँग दे चुनरिया।
ऐसी रँग दे कि रंग नाहीं छूटे,
धोबिया धोए चाहे सारी उमरिया...

अर्थात् जो तेरा (भगवान का) अनुभव है, जो तेरा आनंद है, जो तेरा माधुर्य है, समझ है और जो तेरा सत्त्व है उसी से मेरे दिल की चुनरिया रँग दे। धोबी इसको थोड़े ही धो सकता है !

हमारी इन्द्रियों पर, हमारे मन पर संसार का रंग लगता है। रंग लगता भी है और बदलता भी रहता है लेकिन भक्ति और ज्ञान का रंग यदि एक बार भी लग जाय तो मृत्यु के बाप की भी ताकत नहीं है कि इस रंग को छुड़ा सके। इसी भक्ति और ज्ञान के रंग में खुद को रँगने का पर्व है होली।

और भी व्यापक स्तर पर मनाया गया 'मातृ-पितृ पूजन दिवस'

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

देश-विदेश में मनाये गये 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' की कुछ झलकियाँ...

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट **www.ashram.org** देखें।

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 18th & 19th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.